वार्ता पत्रिका NRICLUB.RU: रूस में भारतीय प्रवासी (अंक संख्या 4, 2026)

№ 4 2026

Varta Patrika

व्यापार | शिक्षा | सफलता की कहानियाँ | समुदाय | जीवनशैली | यात्रा

रूस दिवस की शुभकामनाएं!

ТРУДОРГНАБОР

ПОДБОР
КВАЛИФИЦИРОВАННОГО
ПЕРСОНАЛА ИЗ-ЗА РУБЕЖА

trudorgnabor.ru

+7 495 151 69 54

Varta Patrika

वार्ता पत्रिका (अंक संख्या 4, 2026)

संस्थापक और प्रकाशक:
"एएनओ फॉर असिस्टेंस टू कम्पेट्रिएट्स ऑफ इंडिया 'ब्लिझनी क्लब'"

मीडिया पंजीकरण प्रमाणपत्र संख्या:
FS77-65336 (दिनांक: 12.04.2016)

मुद्रण (प्रिंटिंग):
एलएलसी "फॉर्मेट", निज़नी नोवगोरोड, 178 गागरिन एवेन्यू

प्रकाशन तिथि:
12.06.2026

ईमेल : info@nriclub.ru

Publisher

नायर देवदत्तन
d.nair@ric.media

Project Coordinator

जेस्ली थेकट्टिल मैथ्यू

Managing Editor

दिमित्री कुरबातोव
d.kurbatov@nriclub.ru

Executive Editor

यास्मीन रेड अलवैद

Proof Reader

लिलिया रेयानोवा

Designer

दीपक माउथटिल

Contributors to this Issue:

विक्टोरिया इसाकोवा

जॉर्जी क्वासनिकोव

विक्टोरिया इग्नातिवा

सेम्योन वोरोब्योव

मैक्सिम देमचेंको

मारिया सावचेंकोवा

तिमोफेई शिरोकोव

दार्या करासेवा

Varta Patrika

10 रूस दिवस
एकता, इतिहास और संस्कृति का उत्सव

12 भारत में एयरोस्पेस उद्योग का विकास और रूसी-भारतीय अंतरिक्ष सहयोग
(यूरी गागरिन की उड़ान की 65वीं वर्षगांठ पर)

16 रूस में भारतीय प्रवासियों ने 2026 का स्वागत कैसे किया?

18 मिसाइल बोट्स से लेकर परमाणु पनडुब्बियों तक भारतीय और सोवियत नौसेनाओं के बीच सहयोग की आधी सदी

22 रूस में हिंदी संभावनाएं और चुनौतियां

28 भारतीय ब्रिक्स (BRICS) अध्यक्षता की प्राथमिकताएँ और रूसी-भारतीय सहयोग के लिए नए क्षितिज

31 आगामी कार्यक्रम

32 स्मृति जो हमें साथ लाती है

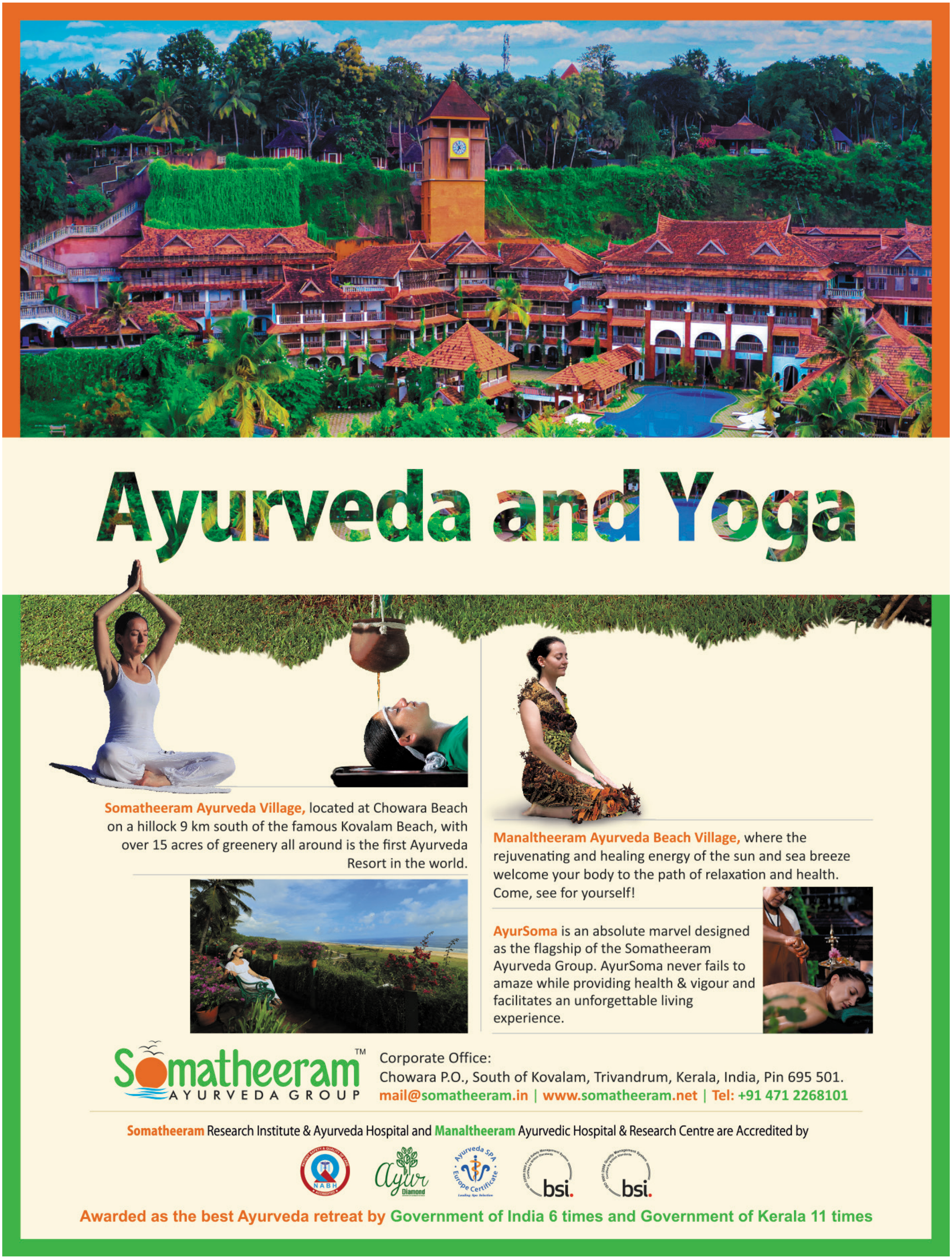
Ayurveda and Yoga
Somatheeram Ayurveda Village, located at Chowara Beach on a hillock 9 km south of the famous Kovalam Beach, with over 15 acres of greenery all around is the first Ayurveda Resort in the world.
Manaltheeram Ayurveda Beach Village, where the rejuvenating and healing energy of the sun and sea breeze welcome your body to the path of relaxation and health. Come, see for yourself!
AyurSoma is an absolute marvel designed as the flagship of the Somatheeram Ayurveda Group. AyurSoma never fails to amaze while providing health & vigour and facilitates an unforgettable living experience.
Somatheeram™ AYURVEDA GROUP
Corporate Office:
Chowara P.O., South of Kovalam, Trivandrum, Kerala, India, Pin 695 501.
mail@somatheeram.in | www.somatheeram.net | Tel: +91 471 2268101
Somatheeram Research Institute & Ayurveda Hospital and Manaltheeram Ayurvedic Hospital & Research Centre are Accredited by
NABH
Ayur Diamond
Ayurveda SPA Europe Certificate
bsi.
bsi.
Awarded as the best Ayurveda retreat by Government of India 6 times and Government of Kerala 11 times

प्रिय पाठकों और मित्रों,

'वार्ता पत्रिका' की संपादकीय टीम की ओर से, रूस दिवस (Russia Day) के उपलक्ष्य में प्रकाशित इस नए अंक में हम आपका स्वागत करते हुए बेहद प्रसन्न हैं।

हमें उम्मीद है कि यह अंक न केवल भारत और रूस के बीच के सहयोग पर आधारित लेख लेकर आएगा, बल्कि ये उन साझा मूल्यों, आपसी सम्मान और भविष्य के प्रति भरोसे को भी दिखाएगा, जो इन दो महान सभ्यताओं को एक-दूसरे से जोड़ते हैं।

इस अंक में हमने भारत और रूस के गहरे और विविध संबंधों को दिखाने की कोशिश की है। इसकी शुरुआत हम एक ऐसी तारीख से कर रहे हैं, जो हमारे दोनों देशों के लिए बहुत खास है — 'विजय दिवस' (Victory Day)। 9 मई के महत्व पर लिखा हमारा यह लेख बताता है कि कैसे नाज़ीवाद के खिलाफ लड़ी गई उस साझा लड़ाई ने हमारे देशों के बीच एक अटूट बंधन बनाया, और क्यों इतिहास के उन वीर पन्नों को याद रखना आज भी रूस और भारत के लिए उतना ही जरूरी है।

इसके अलावा, हम ब्रिक्स (BRICS) की अध्यक्षता के दौरान भारत की प्राथमिकताओं पर भी नज़र डालते हैं। आज ब्रिक्स एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए प्रमुख मंच बन गया है जो संतुलित हो और जहाँ सबकी आवाज़ सुनी जाए। हमें इस बात पर गर्व है कि हम इस अंक में उन पहलों को शामिल कर रहे हैं, जिन्हें भारत और उसके सहयोगी देशों ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मज़बूत करने के लिए शुरू किया है।

भाषा भी हमारे देशों के बीच एक सांस्कृतिक पुल का काम करती है। रूस में हिंदी सीखने के बढ़ते चलन पर हमारी विशेष रिपोर्ट यह दिखाती है कि भारतीय संस्कृति के प्रति वहाँ लोगों की रुचि लगातार बढ़ रही है। यह स्पष्ट है कि भाषा ही वह माध्यम है, जो हमें इंसानी स्तर पर एक-दूसरे को बेहतर तरीके से समझने में मदद करती है।

रूस और भारत की साझेदारी में 'हाई-टेक' सहयोग एक अहम स्तंभ है। इसे ध्यान में रखते हुए, हमने एयरोस्पेस और रक्षा क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच हुए सहयोग की ऐतिहासिक और वर्तमान उपलब्धियों पर प्रकाश डाला है। ये उपलब्धियां न केवल हमारे आपसी भरोसे को दिखाती हैं, बल्कि यह भी बताती हैं कि तकनीकी स्तर पर दोनों देश एक-दूसरे के साथ कितनी मजबूती से जुड़े हुए हैं।

अंत में, हम यह चाहते हैं कि यह पत्रिका सिर्फ जानकारी देने का जरिया न रहे। हमें उम्मीद है कि रूस में रहने वाले भारतीयों के लिए यह एक मददगार साथी साबित होगी। इस अंक में, हमने हाल के कार्यक्रमों की खास झलकियाँ और आने वाले आयोजनों की जानकारी दी है, जो आपको रूस में भारतीय समुदाय के जीवंत सांस्कृतिक सफर से जोड़कर रखेंगे।

हम आपके सुखद और ज्ञानवर्धक अनुभव की कामना करते हैं। हमें पूरी उम्मीद है कि 'वार्ता पत्रिका' का यह अंक हमारे देशों के लोगों के बीच मित्रता और आपसी समझ को और अधिक मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम साबित होगा।

भवदीय,

दिमित्री कुर्बातोव
अंक संपादक

ENGLISH INTERNATIONAL SCHOOL

Scientia Experientia Successus

АНГЛИЙСКАЯ МЕЖДУНАРОДНАЯ ШКОЛА

ДЛЯ ДЕТЕЙ В ВОЗРАСТЕ ОТ 3 ДО 18 ЛЕТ

- Обучение на английском языке
- Высоко квалифицированные преподаватели носители языка
- Международный состав классов
- Признание результатов обучения по всему миру

www.englishedmoscow.com
+7 495 668 70 50

THE DUKE OF EDINBURGH'S INTERNATIONAL AWARD

Learning Resource Network

LRN International School

CIS ACCREDITED SCHOOL

COBIS ACCREDITED MEMBER

СКИДКА НА ОБУЧЕНИЕ ВСЕМ ЧИТАТЕЛЯМ ИЗДАНИЯ

ДЛЯ ПОЛУЧЕНИЯ СКИДКИ ЗАПОЛНИТЕ ФОРМУ ЧЕРЕЗ QR-КОД

प्रिय पाठकों,

वार्ता पत्रिका की नई कार्यकारी संपादक (Executive Editor) के रूप में आपको यह पहला पत्र लिखना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है। साथ ही, मैं अपनी जिम्मेदारी को भी अच्छे से समझती हूं। जब कोई व्यक्ति किसी नए पद पर आता है, तो वह दिखाना चाहता है कि उसे सब कुछ पता है। लेकिन मैं आपसे पूरी ईमानदारी से बात करना चाहती हूं। मैं एक युवा पत्रकार हूं और अभी भी बहुत कुछ सीख रही हूं। मैं यहां यह सोचकर नहीं आई हूं कि मुझे सब कुछ आता है। इसके बजाय, मैं नई चीजें सीखने और आपकी कहानियों को पूरी जिम्मेदारी के साथ आप तक पहुंचाने के लिए तैयार हूं। मेरा बैकग्राउंड थोड़ा अलग है। मैं आधी रूसी और आधी जॉर्डनियन हूं। मेरा बचपन अबू धाबी में बीता, जहां दुनिया भर के अलग-अलग देशों के लोग रहते हैं। रूस में रह रहे भारतीय लोगों की इस पत्रिका से जुड़ने से पहले ही, मेरे जीवन में भारतीय लोगों की बड़ी भूमिका रही है। मेरे स्कूल के दोस्त, पड़ोसी, शिक्षक और सहकर्मी सभी भारतीय रहे हैं।

खाड़ी देशों में रहने वाले दूसरे लोगों की तरह, मैंने भी जल्दी ही यह समझ लिया था कि भारतीय संस्कृति कोई पराई चीज़ नहीं है। यह वहां के रोजमर्रा के जीवन का एक बड़ा हिस्सा है। फिर भी, मैं यह मानती हूं कि मुझे अभी बहुत कुछ सीखना है। भारत सिर्फ कोई एक कहानी नहीं है। यह बहुत बड़ी और गहरी सभ्यता है, जिसमें कई तरह की भाषाएं, परंपराएं, धर्म और विचार शामिल हैं। रूस में रहने वाला भारतीय समुदाय भी इसी खूबी को दिखाता है। इस पद पर काम करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि मुझे ऐसे लोगों से मिलने का मौका मिलेगा जिनकी कहानियां अलग-अलग देशों और संस्कृतियों को जोड़ती हैं। मैं इन कहानियों को आप सभी के साथ बांटना चाहती हूं। जैसे-जैसे 'वार्ता पत्रिका' आगे बढ़ेगी, हम भारतीय समुदाय की सफलताओं की कहानियां दिखाते रहेंगे। हम रूस और भारत के मजबूत होते रिश्तों की बात करेंगे। साथ ही, उन लोगों को अपनी बात रखने का मौका देंगे जिनकी आवाज सुनी जानी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि ये पत्रिका एक ऐसी जगह बनेगी जहां लोग दूसरों के बारे में और खुद के बारे में भी कुछ नया जान सकेंगे। मेरे लिए यह काम सीखने का एक नया सफर है। मैं इस समुदाय की उन सभी कहानियों और अनुभवों को जानने के लिए बहुत उत्सुक हूं, जो इसे इतना खास बनाते हैं। मुझे उम्मीद है कि आप इस सफर में मेरे साथ जुड़ेंगे और मेरा मार्गदर्शन करेंगे।

गर्मजोशी भरे सादर के साथ,

यास्मीन अल्वैद
कार्यकारी संपादक
वार्ता पत्रिका

विक्टोरिया इसाकोवा

पीपुल्स फ्रेंडशिप यूनिवर्सिटी रशिया (RUDN) में भाषाविज्ञान (फिलॉलॉजिकल) संकाय की छात्रा

रूस दिवस

एकता, इतिहास और संस्कृति का उत्सव

गर्मियों की शुरुआत खिली हुई धूप, सजी-धजी सड़कों और हवा में गूंजते संगीत के साथ होती है। 12 जून को रूस में बिल्कुल ऐसा ही माहौल होता है। यह दिन देश की एकता और गर्व का प्रतीक है। रूस दिवस को देखकर आप रूस की संस्कृति और इतिहास को बहुत करीब से समझ सकते हैं। भारतीय पाठकों के लिए, यह रूस को जानने का एक बेहतरीन जरिया है।

क्षेत्रफल के हिसाब से रूस दुनिया का सबसे बड़ा देश है। यहाँ 190 से ज्यादा अलग-अलग समुदाय (जातीय समूह) रहते हैं, जो 150 से अधिक भाषाएं बोलते हैं। इन सभी समुदायों ने मिलकर रूस की संस्कृति को समृद्ध बनाया है। यही वजह है कि रूसी लोग 'रूस दिवस' को अपनी एकता के त्यौहार के रूप में बहुत गर्व से मनाते हैं।"

इस दिन का महत्व बहुत गहरा है। दरअसल, 12 जून 1990 को रूस ने अपनी सत्ता की घोषणा की थी। यह एक ऐसा

फैसला था जिसने देश में सभी राजनीतिक दलों को बराबर के अधिकार दिए और सत्ता को सही तरीके से बांटने का रास्ता साफ किया। 1992 में इस दिन को आधिकारिक तौर पर सरकारी छुट्टी घोषित कर दिया गया। लोग इसे अक्सर 'स्वतंत्रता दिवस' कहने लगे, हालांकि इतिहासकार इस नाम को पूरी तरह सही नहीं मानते हैं।"

भले ही इस दिन को 2002 में इसका वर्तमान आधिकारिक नाम मिला, लेकिन इसके जश्न की शुरुआत 1995 से ही हो गई थी। हर साल इस दिन से ठीक पहले, संस्कृति, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में बेहतरीन काम करने वाले लोगों को 'राज्य पुरस्कार' देकर सम्मानित किया जाता है। पिछले 30 से ज्यादा सालों में, 12 जून का यह दिन पीढ़ियों के बीच के रिश्ते, रूस के हजार साल पुराने इतिहास और हर हाल में रूसी लोगों की एकता का एक बड़ा प्रतीक बन गया है।"

साल 2026 में रूस दिवस के मौके पर पूरे देश में संगीत, प्रदर्शनी और खेल-कूद के कार्यक्रम हो रहे हैं। भारतीय पर्यटकों के लिए यह रूस के इतिहास और परंपराओं को जानने का बेहतरीन मौका है। वो संग्रहालयों और सांस्कृतिक केंद्रों में होने वाले विशेष कार्यक्रमों में शामिल हो सकते हैं। 12 जून की शाम को कई शहरों में शानदार संगीत कार्यक्रम भी होंगे.

रूस में संस्कृति का बहुत महत्व है, इसलिए रूस दिवस के कई कार्यक्रम विदेशी पर्यटकों के लिए खास तौर पर तैयार किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों के जरिए वे रूस के लोक नृत्य, संगीत और सदियों पुरानी परंपराओं को करीब से जान सकते हैं।

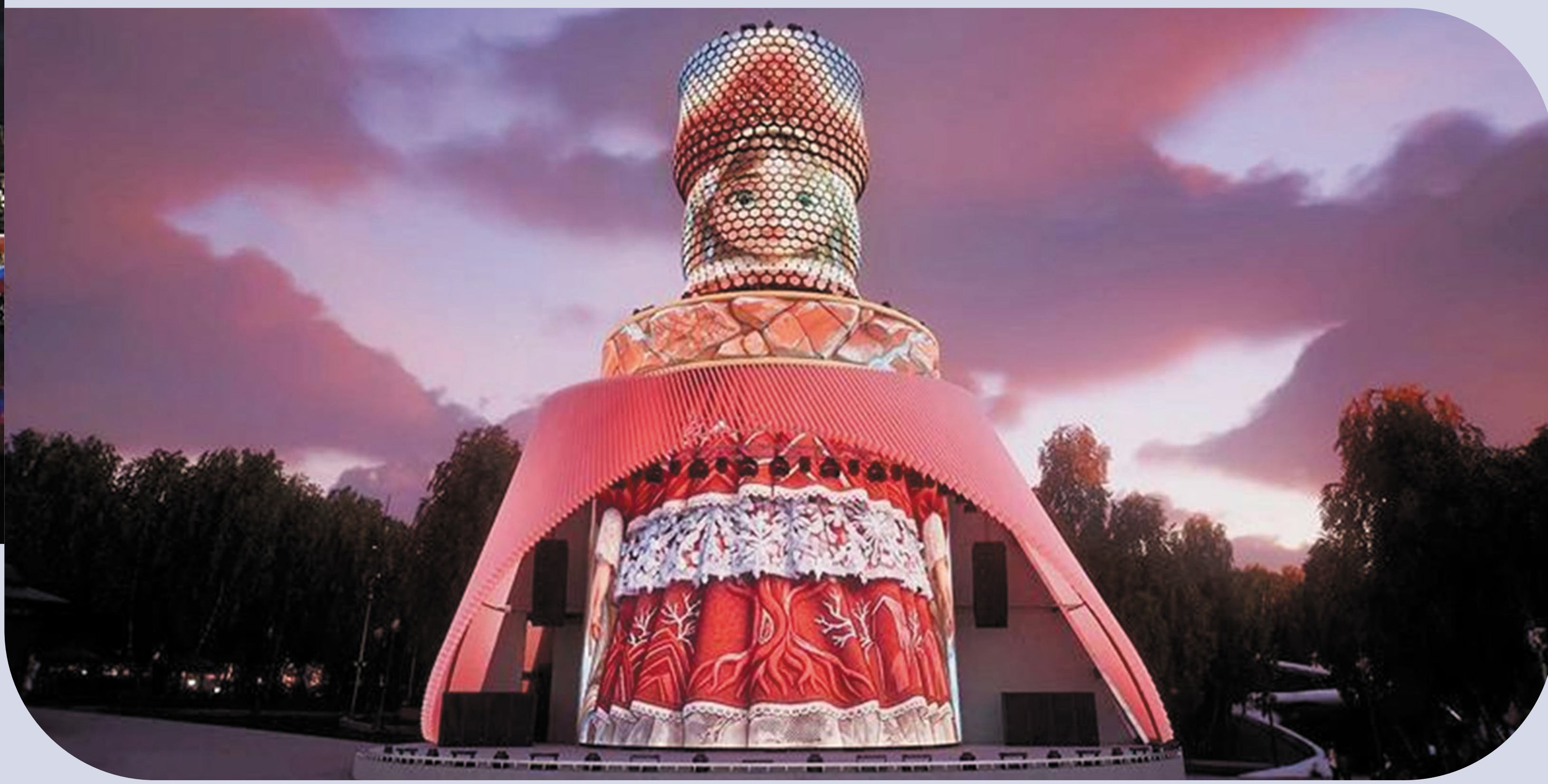

इसका एक बेहतरीन उदाहरण मॉस्को का ऐतिहासिक उत्सव है, जो हमें प्राचीन काल से लेकर 1980 के दशक तक की सैर कराता है। इस दौरान लोग पुराने समय के जीवन को फिर से जीते हुए नजर आते हैं। साथ ही, लोहारों, कुम्हारों और बुनकरों जैसे कुशल कारीगरों की कार्यशालाओं (वर्कशॉप) में पर्यटक पारंपरिक रूसी शिल्प सीख सकते हैं। मॉस्को के 'ज़रीद्यादये पार्क' में होने वाला 'कोड ऑफ़ रशिया' कार्यक्रम भी पर्यटकों को रूस की प्रकृति, लोक कथाओं और विज्ञान की दुनिया से रूबरू कराता है।"

जॉर्जी क्वासनिकोव
एमजीआईएमओ (MGIMO) यूनिवर्सिटी के छात्र

भारत में एयरोस्पेस उद्योग का विकास और रूसी-भारतीय अंतरिक्ष सहयोग

(यूरी गागरिन की उड़ान की 65वीं वर्षगांठ पर)

12 अप्रैल 1961 को यूरी गागरिन ने मानवता के लिए अंतरिक्ष का रास्ता खोला था। इसके सात महीने बाद, 29 नवंबर को, दुनिया के यह पहले अंतरिक्ष यात्री दिल्ली के हवाई अड्डे पर उतरे। यहीं से उनके दक्षिण एशियाई दौरे की शुरुआत हुई, जिसमें लखनऊ, बॉम्बे (मुंबई), कलकत्ता (कोलकाता) और हैदराबाद शामिल थे। इस यात्रा ने दोनों देशों के बीच अंतरिक्ष संवाद की एक मजबूत नींव रखी। पिछले 65 वर्षों में यह सहयोग सिर्फ एकल रॉकेट प्रक्षेपणों से आगे बढ़कर, अब राष्ट्रीय कक्षीय (ऑर्बिटल) कार्यक्रमों के तकनीकी एकीकरण तक पहुँच चुका है। आज, भारत में रूस के राजदूत डेनिस अलीपोव के अनुसार, यह साझेदारी तीन मुख्य क्षेत्रों पर टिकी है: उपग्रह नेविगेशन, मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम और रॉकेट इंजन निर्माण। ये तीनों विषय ही इस लेख के मुख्य आधार (तर्क) को तय करते हैं।

उपग्रह नेविगेशन में दोनों देशों के सहयोग का इतिहास आधी सदी पुराना है। 19 अप्रैल 1975 को, सोवियत संघ के कपुस्टिन यार कॉस्मोड्रोम से 'कॉस्मोस-3एम' रॉकेट ने उड़ान भरी, जिसने भारत के पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' को अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित किया। इस

उपग्रह को पूरी तरह से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा डिज़ाइन और बनाया गया था, जबकि सोवियत संघ (USSR) ने इसे अंतरिक्ष तक ले जाने के लिए अपना रॉकेट (वाहक) दिया था। इसके बाद, भारत के दो और अंतरिक्ष यान 'भास्कर-I' और 'भास्कर-II' भी सोवियत संघ द्वारा मुफ्त में लॉन्च किए गए। इन तीन सफल प्रक्षेपणों ने दुनिया के अंतरिक्ष क्लब में भारत का रास्ता साफ कर दिया। आज, भारतीय उपग्रह कार्यक्रम ने न केवल दुनिया के बड़े देशों की बराबरी कर ली है, बल्कि एक बड़ा रिकॉर्ड भी बनाया है। साल 2017 में, भारत के एक अकेले पीएसएलवी (PSLV) रॉकेट ने एक ही बार में रिकॉर्ड 104 उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित किया था।

इसके अलावा, साल 2020 की शुरुआत तक भारत ने 'नैविक' (NavIC) प्रणाली को पूरी तरह तैयार कर लिया था। यह भारत की अपनी क्षेत्रीय नेविगेशन उपग्रह प्रणाली है, जो पूरे देश और इसके आस-पास के इलाकों को कवर करती है। दूसरी ओर, रूस अपनी वैश्विक 'ग्लोनास' (GLONASS) प्रणाली को लगातार मजबूत बनाए हुए है, जिसके सिग्नल पूरी पृथ्वी पर कहीं भी मिल सकते हैं। आज, इन दोनों नेविगेशन प्रणालियों का मिलाप (तालमेल) एक बिल्कुल नए स्तर पर पहुँच रहा है। दोनों देश एक-दूसरे के यहाँ ग्राउंड स्टेशन बनाने के लिए बातचीत कर रहे हैं। इसके तहत, बेंगलुरु में रूस का एक 'ग्लोनास' स्टेशन बनाया जाएगा, और रूस के नोवोसिबिर्स्क शहर में भारत का एक 'नैविक' स्टेशन स्थापित किया जाएगा।

इस कदम के महत्व को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि उपग्रह नेविगेशन (सैटेलाइट नेविगेशन) कैसे काम करता है। आसमान में मौजूद उपग्रह पृथ्वी पर रेडियो सिग्नल भेजते हैं। हमारा मोबाइल फोन ऐसे कई उपग्रहों से सिग्नल पाकर हमारी सही लोकेशन (कोऑर्डिनेट्स) का पता लगाता है। हालांकि, कुछ मीटर तक की बिल्कुल सटीक लोकेशन जानने के लिए जमीन पर भी एक सिस्टम की जरूरत होती है। जमीन पर मौजूद स्टेशनों को हर उपग्रह की स्थिति पर नजर रखनी होती है और उनकी परमाणु घड़ियों (atomic clocks) का समय सही करना होता है। इसके लिए ग्राउंड स्टेशनों के एक बड़े नेटवर्क की आवश्यकता होती है। सीधे शब्दों में कहें, तो ग्राउंड स्टेशनों की संख्या जितनी अधिक होगी, नेविगेशन उतना ही सटीक होगा।इस बारे में रूसी राजदूत डेनिस अलीपोव ने कहा: "दोनों देशों में ग्राउंड मेजरमेंट कलेक्शन स्टेशनों को बराबरी

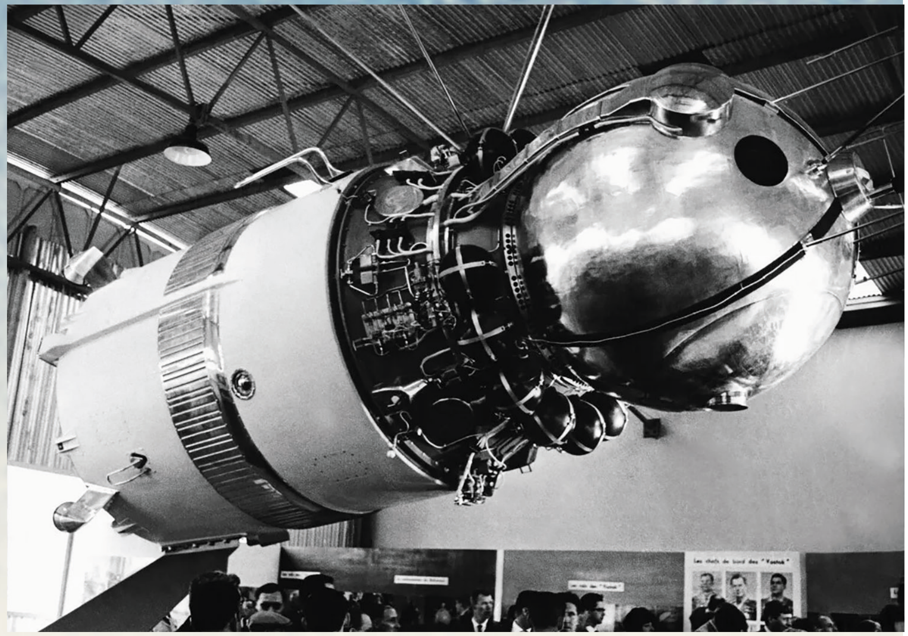

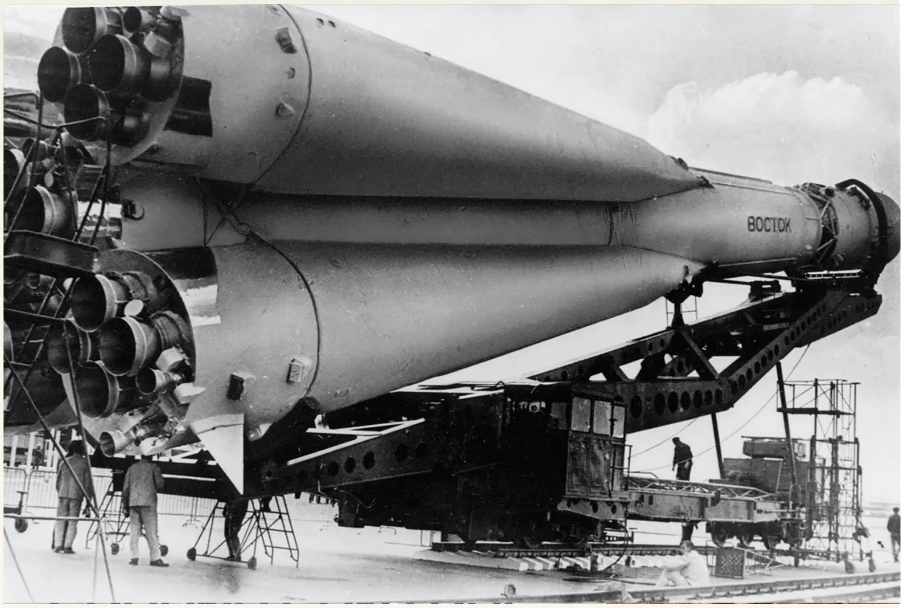

के आधार पर बनाने का काम चल रहा है।" इस तकनीकी बात के पीछे दोनों देशों का एक-दूसरे पर गहरा भरोसा छिपा है। दोनों देश एक तरह से अपनी नेविगेशन प्रणालियों की "आंखें और कान" एक-दूसरे के साथ साझा कर रहे हैं। ऐसा सहयोग दोनों देशों की तकनीकी संप्रभुता (टेक्निकल आजादी) को और मजबूत करता है।

जहाँ एक तरफ उपग्रह नेविगेशन काफी हद तक भारत के अपने प्रयासों से आगे बढ़ा, वहीं दोनों देशों के बीच सहयोग 'मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान' (ह्यूमन स्पेसफ्लाइट) के क्षेत्र में सबसे खुलकर सामने आया। लंबे समय तक राकेश शर्मा की अंतरिक्ष उड़ान इस दोस्ती का सबसे बड़ा प्रतीक बनी रही। 3 अप्रैल 1984 को, वह सोवियत संघ के 'इंटरकॉस्मोस' कार्यक्रम के तहत 'सोयुज

इसके साथ ही, दोनों देशों के बीच एक और बहुत बड़ी योजना आकार ले रही है। दिसंबर 2025 में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की नई दिल्ली यात्रा के दौरान, रूस ने घोषणा की थी कि वह अपने भविष्य के रूसी कक्षीय स्टेशन (ROS) को 51.6-डिग्री झुकाव (इन्क्लिनेशन) वाली कक्षा में स्थापित करेगा। खास बात यह है कि भारत ने भी अपने राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन, 'भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन' (BAS) के लिए ठीक इसी झुकाव को चुना है।

टी-11' अंतरिक्ष यान से उड़ान भरकर अंतरिक्ष में जाने वाले पहले भारतीय बने। 1970 और 1980 के दशक की इस सोवियत पहल ने चेकोस्लोवाकिया से लेकर क्यूबा तक, एक दर्जन से अधिक देशों के नागरिकों को अंतरिक्ष की कक्षा में काम करने का मौका दिया था। 'साल्युत-7' अंतरिक्ष स्टेशन पर लगभग आठ दिन बिताने के बाद, राकेश शर्मा भारत के राष्ट्रीय नायक (हीरो) बन गए। सोवियत संघ ने भी उन्हें अपने सबसे बड़े सम्मान 'हीरो ऑफ द सोवियत यूनियन' से नवाजा। जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उनसे पूछा था कि अंतरिक्ष से भारत कैसा दिखता है, तो उन्होंने गर्व से कहा था, "सारे जहाँ से अच्छा।"

हालांकि, उस समय भी भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम अपनी स्वतंत्र सफलताओं के लिए जमीन तैयार कर रहा था। इन्हीं प्रयासों की बदौलत, साल 2008 में 'चंद्रयान-1' मिशन चंद्रमा पर पानी की बर्फ खोजने में सफल रहा। इसके बाद, अगस्त 2023 में 'चंद्रयान-3' ने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास इतिहास की पहली सफल 'सॉफ्ट लैंडिंग' कर दिखाई। यह वही क्षेत्र है जहाँ पहले खोजी गई पानी की बर्फ मौजूद है, जो भविष्य के गहरे अंतरिक्ष अभियानों (डीप स्पेस मिशन) के लिए ईंधन और ऑक्सीजन का काम कर सकती है। इसका मतलब यह भी है कि आगे के चंद्र मिशनों को पृथ्वी से सब कुछ ले जाने की जरूरत नहीं होगी, बल्कि वे वहाँ के स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर सकेंगे। इसके अलावा, साल 2014 में 'मंगलयान' अंतरिक्ष यान ने अपने पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में प्रवेश कर लिया था। इससे पहले दुनिया के किसी भी देश ने अपने पहले ही मंगल मिशन में ऐसी सफलता हासिल नहीं की थी। इस शानदार रिकॉर्ड के साथ, भारत एक बराबर के भागीदार के रूप में दुनिया के शीर्ष अंतरिक्ष देशों के क्लब में शामिल हो गया।

आज, मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान में भारत और रूस का सहयोग एक नए रूप में आगे बढ़ रहा है। साल 2020 में, भारतीय वायु सेना के चार पायलट मॉस्को के पास स्टार सिटी में स्थित 'यूरी गागरिन कॉस्मोनॉट ट्रेनिंग सेंटर' पहुंचे थे। ये पायलट भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री यानी "गगनॉट्स" के रूप में ट्रेनिंग लेने वहाँ गए थे। इसके साथ ही, रूसी विशेषज्ञ अंतरिक्ष यान के डिज़ाइन, उम्मीदवारों के चयन और उनकी मेडिकल जांच में भारतीय वैज्ञानिकों की मदद कर रहे हैं। यही नहीं, रूस इस मिशन के लिए अंतरिक्ष यात्री बचाव प्रणाली (रेस्क्यू सिस्टम) और उड़ान के जरूरी उपकरण भी तैयार कर रहा है। उदाहरण के लिए, रोस्कोस्मोस की सहायक कंपनी 'ग्लेवकोस्मोस' ने भारत को खास स्पेससूट, झटके को सोखने वाली सीटें और उनकी सुरक्षा के लिए विशेष काउच लाइनर्स सौंपे हैं।

इसके साथ ही, दोनों देशों के बीच एक और बहुत बड़ी योजना आकार ले रही है। दिसंबर 2025 में राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की नई दिल्ली यात्रा के दौरान, रूस ने घोषणा की थी कि वह अपने भविष्य के रूसी कक्षीय स्टेशन (ROS) को 51.6-डिग्री झुकाव (इन्क्लिनेशन) वाली कक्षा में स्थापित करेगा। खास बात यह है कि भारत ने भी अपने राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन, 'भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन' (BAS) के लिए ठीक इसी झुकाव को चुना है। इस बारे में रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री डेनिस मंतुरोव ने बताया: "यह फैसला दोनों देशों के बीच सहयोग के नए रास्ते खोलेगा। इससे हम मिलकर वैज्ञानिक प्रयोग और संयुक्त अंतरिक्ष अभियान चला सकेंगे।"मानवयुक्त अंतरिक्ष उड़ान के लिए 51.6 डिग्री का झुकाव दशकों से एक परखा हुआ मानक रहा है। सोवियत संघ के सभी अंतरिक्ष स्टेशन इसी पर काम करते थे और आज अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) भी इसी का उपयोग करता है। यह कक्षा रूस के बैकोनूर कॉस्मोड्रोम और भारत के श्रीहरिकोटा स्पेसपोर्ट, दोनों जगहों से रॉकेट लॉन्च करने के लिए सबसे सही है। साल 2030 के बाद जब आईएसएस (ISS) का समय पूरा हो जाएगा, तब भारत और रूस के ये दोनों राष्ट्रीय स्टेशन अंतरिक्ष में पड़ोसी की तरह काम करेंगे। इससे दोनों देशों के लिए क्रू (अंतरिक्ष यात्रियों) और वैज्ञानिक डेटा का आपस में आदान-प्रदान करना बहुत आसान हो जाएगा।

मानव अंतरिक्ष उड़ान में गहराता यह सहयोग एक तीसरे मुख्य क्षेत्र, यानी रॉकेट इंजन निर्माण के लिए भी रास्ते खोल रहा है। इस क्षेत्र में दोनों देशों की साझेदारी साल 2007 से शुरू हुई थी। तब इसरो (ISRO) और रोस्कोस्मोस ने 'चंद्रयान-2' मिशन को मिलकर पूरा करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, जिसके तहत रूसी एजेंसी को लैंडर मॉड्यूल बनाने की जिम्मेदारी दी गई थी। हालांकि, बाद में रूस इस परियोजना से

अलग हो गया और भारत ने खुद अपने दम पर लैंडिंग क्राफ्ट (लैंडर) का निर्माण किया। इसके बावजूद, शुरुआती संयुक्त डिज़ाइन चरण के दौरान जो वैज्ञानिक और तकनीकी आधार तैयार हुआ था, उसने इस मिशन की अंतिम सफलता में बड़ी भूमिका निभाई। इसी तकनीक के एक उन्नत (अपग्रेड) संस्करण की बदौलत साल 2023 में भारत ने चंद्रमा पर अपनी ऐतिहासिक और विजयी लैंडिंग की।आज, जहाँ एक तरफ भारत अपने राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) का डिज़ाइन तैयार कर रहा है, वहीं रोस्कोस्मोस भी अपने रूसी कक्षीय स्टेशन (ROS) को अंतरिक्ष में भेजने की तैयारी में है। ऐसे में इंजन निर्माण और उससे जुड़े क्षेत्रों में एक-दूसरे के अनुभवों (विशेषज्ञता) की जरूरत लगातार बढ़ रही है। भारत की रुचि विशेष रूप से रूस के तरल-प्रणोदक (लिक्विड-प्रोपेलेंट) रॉकेट इंजन डिज़ाइनों में है, क्योंकि इस तकनीक में रूस हमेशा से दुनिया में सबसे आगे रहा है। इसी सिलसिले में, दिसंबर 2025 में दोनों देश एक बड़े समझौते पर सहमत हुए, जिसके तहत भारत को रूस के उन्नत 'RD-191M' रॉकेट इंजन के लाइसेंस प्राप्त उत्पादन (लोकल मैन्युफैक्चरिंग) के अधिकार मिल गए हैं।

इस बड़ी उपलब्धि के महत्व को बेहतर ढंग से समझने के लिए, इसके पीछे की तकनीक को जानना मददगार होगा। रॉकेट इंजनों को उनके ईंधन (प्रणोदक) के आधार पर अलग-अलग प्रकारों में बाँटा जाता है। इनमें सबसे जटिल क्रायोजेनिक इंजन होते हैं, जो तरल हाइड्रोजन पर चलते हैं और जिन्हें बहुत ही कम (ठंडे) तापमान पर रखने की आवश्यकता होती है। 'RD-191M' इंजन अंतरिक्ष विज्ञान की अगली पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक सेमी-क्रायोजेनिक इंजन है, जो बेहद साफ केरोसिन और तरल ऑक्सीजन के तालमेल से चलता है। इस वजह से इसे चलाना काफी आसान और अधिक भरोसेमंद हो जाता है। इस इंजन को भारत के सबसे शक्तिशाली रॉकेट, एलवीएम3 (LVM3) में जोड़ने से इसकी वजन ले जाने की क्षमता (पेलोड कैपेसिटी) लगभग दोगुनी हो जाएगी। इससे यह क्षमता मौजूदा 4.2 टन से बढ़कर 6.5 और 7 टन के बीच पहुँच जाएगी।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत केवल बने-बनाए इंजन खरीदने के बजाय, इन्हें अपने देश में खुद डिज़ाइन करने, बनाने और टेस्ट करने के अधिकार सुरक्षित कर रहा है। यह तरीका भारत सरकार की "मेक इन इंडिया" मुहिम के साथ पूरी तरह मेल खाता है, जिसका उद्देश्य देश के भीतर ही निर्माण क्षमताओं को बढ़ाना है।नतीजतन, यूरी गागरिन ने जब दिल्ली की सड़कों पर उमड़ी उत्साही भीड़ से यह वादा किया था कि एक दिन भारतीय अंतरिक्ष यात्री भी अंतरिक्ष की यात्रा करेगा, तब से लेकर पिछले 65 वर्षों में भारत-रूस अंतरिक्ष साझेदारी ने एक शानदार सफर तय किया है।

सोवियत रॉकेट से भारत के पहले उपग्रह के प्रक्षेपण से शुरू हुआ यह सफर, आज अत्याधुनिक रॉकेट इंजनों के मिलकर उत्पादन करने तक पहुँच गया है। हर एक पड़ाव पर यह सहयोग न केवल बड़ा हुआ है, बल्कि इसका स्वरूप भी बदला है। आज यह दो बराबरी की ताकतों के बीच की साझेदारी है, जो आने वाले कल की तकनीक को मिलकर लिख रहे हैं। रूसी राजदूत डेनिस अलीपोव द्वारा बताए गए ये तीन रणनीतिक स्तंभ—नेविगेशन, मानव अंतरिक्ष उड़ान और इंजन निर्माण—इस साझेदारी की मजबूत नींव हैं। ये साबित करते हैं कि अंतरिक्ष का क्षेत्र भारत और रूस के दूरदर्शी संबंधों को हमेशा आगे बढ़ाने वाला एक सबसे मजबूत जरिया बना रहेगा।

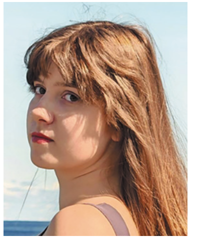

विक्टोरिया इग्नातिवा

रूसी विदेश मंत्रालय के अंतर्गत एमजीआईएमओ (MGIMO) यूनिवर्सिटी की छात्रा।

रूस में भारतीय प्रवासियों ने 2026 का स्वागत कैसे किया?

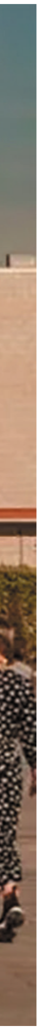

साल 2026 पिछले दशक में रूसी-भारतीय सांस्कृतिक संबंधों के लिए सबसे अधिक गतिविधियों से भरे वर्षों में से एक के रूप में आत्मविश्वास से उभर रहा है। मॉस्को, सेंट पीटर्सबर्ग और रूस के क्षेत्रों में भारतीय प्रवासी संगठनों ने राजनयिक रिसेप्शन से लेकर रंगों के सड़क उत्सवों तक दर्जनों कार्यक्रम आयोजित किए हैं। यह लेख जनवरी से मई 2026 की शुरुआत तक की मुख्य घटनाओं का एक वृत्तांत (क्रॉनिकल) प्रदान करता है।

रूस में वर्ष 2026 को लोगों की एकता का वर्ष घोषित किया गया है, और भारतीय समुदाय ने इस एजेंडे में सक्रिय रूप से भाग लिया है।

गतिविधियों से भरा यह वर्ष "माई इंडिया" (मेरा भारत) उत्सव के साथ खुला, जो 2 से 14 जनवरी तक मॉस्को में आयोजित हुआ। हनोई-मॉस्को शॉपिंग सेंटर के मुख्य मंच ने मॉस्को, मॉस्को क्षेत्र, मरमंस्क, सर्गिएव पोसाद, श्चियोल्कोवो और रूसी संघ के अन्य शहरों के भारतीय नृत्य समूहों के प्रदर्शनों की मेजबानी की।

जनवरी के अंत में, मॉस्को में भारत का मुख्य राष्ट्रीय पर्व – गणतंत्र दिवस की 77वीं वर्षगांठ मनाई गई। 26 जनवरी को आयोजित इस समारोह में कई प्रतिष्ठित अतिथि एकत्र हुए; आमंत्रित लोगों में रूस में कृष्ण चेतना समितियों के केंद्र (CSKCR) के उपाध्यक्ष साधुप्रिय दास और रूसी संघ के उप विदेश मंत्री आंद्रेई रुडेंको शामिल थे।

व्लादिवोस्तोक में, भारत के महावाणिज्य दूतावास ने एक रिसेप्शन आयोजित किया, जिसमें प्रिमॉस्की क्राई के गवर्नर ओलेग कोझेम्याको और व्लादिवोस्तोक सिटी ड्यूमा के अध्यक्ष आंद्रेई ब्रिक ने भाग लिया। इस आयोजन ने फार ईस्ट में भारतीय प्रवासियों के महत्व को रेखांकित किया, जहां कई भारतीय छात्र और विशेषज्ञ आईटी और लॉजिस्टिक्स में काम करते हैं।

27 से 28 मार्च तक, येकातेरिनबर्ग में पहले भारतीय फिल्म महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसकी मेजबानी यूराल क्षेत्र की इस राजधानी में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने की। इस दौरान येल्तसिन सेंटर में ऑस्कर विजेता सत्यजीत रे की मशहूर फिल्मों: 'जोई बाबा फेलूनाथ', 'महानगर', 'नायक' और 'चारुलता' की स्क्रीनिंग की गई। इस महोत्सव में प्रसिद्ध भारतीय फोटोग्राफर निमाई घोष की एक फोटोग्राफी प्रदर्शनी भी लगाई गई, जो महान निर्देशक सत्यजीत रे के साथ अपने लंबे समय के सहयोग के लिए जाने जाते हैं।

पिछले छह महीनों के घटनाक्रमों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि रूस में भारतीय प्रवासी अब एक अधिक व्यवस्थित और संगठित दृष्टिकोण की ओर बढ़ रहे हैं। यह बदलाव आमंत्रित अतिथियों के उच्च स्तर, दर्शकों के बड़े पैमाने और साथ ही इन कार्यक्रमों की व्यापक भौगोलिक पहुँच में साफ झलकता है। यह एक बार फिर प्रदर्शित करता है कि रूस में भारतीय समुदाय केवल मेहमान नहीं है, बल्कि हमारे बहुराष्ट्रीय समाज का एक अभिन्न अंग बन चुका है।

वर्ष 2026 के आगामी पाँच महीने भी इतने ही गतिविधियों से भरे रहने वाले हैं। रूसी पाठकों के लिए हमारी मुख्य सलाह यही है कि वे भारतीय दूतावास और सांस्कृतिक केंद्रों के आगामी कार्यक्रमों पर पैनी नज़र रखें। किसी होली मिलन उत्सव या सितार संगीत कार्यक्रम (कंसर्ट) का हिस्सा बनकर उसे स्वयं अनुभव करना, समाचारों में उसके बारे में दस बार पढ़ने से कहीं अधिक बेहतर और आनंददायक है।

गतिविधियों से भरा यह वर्ष "माई इंडिया" (मेरा भारत) उत्सव के साथ खुला, जो 2 से 14 जनवरी तक मॉस्को में आयोजित हुआ। हनोई-मॉस्को शॉपिंग सेंटर के मुख्य मंच ने मॉस्को, मॉस्को क्षेत्र, मरमंस्क, सर्गिएव पोसाद, श्चियोल्कोवो और रूसी संघ के अन्य शहरों के भारतीय नृत्य समूहों के प्रदर्शनों की मेजबानी की।

27 से 28 मार्च तक, येकातेरिनबर्ग में पहले भारतीय फिल्म महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसकी मेजबानी यूराल क्षेत्र की इस राजधानी में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने की। इस दौरान येल्तसिन सेंटर में ऑस्कर विजेता सत्यजीत रे की मशहूर फिल्मों: 'जोई बाबा फेलूनाथ', 'महानगर', 'नायक' और 'चारुलता' की स्क्रीनिंग की गई।

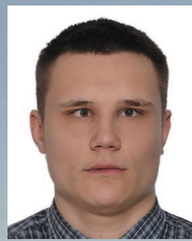

सेम्योन वोरोब्योव

लोमोनोसोव मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ
एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज के छात्र

मिसाइल बोट्स से लेकर परमाणु पनडुब्बियों तक

भारतीय और सोवियत नौसेनाओं के बीच सहयोग की आधी सदी

4 दिसंबर 1971 को रात 22:45 बजे, कराची के रास्तों पर गश्त कर रहे पाकिस्तानी विध्वंसक (डिस्ट्रॉयर) पीएनएस खैबर के दाहिने हिस्से (स्टारबोर्ड साइड) पर एक मिसाइल टकराई। पांच मिनट बाद, एक दूसरे मिसाइल हमले ने जहाज के गोला-बारूद के भंडार (मैगजीन) में विस्फोट कर दिया। अगले डेढ़ घंटे में, भारतीय नौसेना के बेड़े ने एक और विध्वंसक, एक माइनस्वीपर और एक सैन्य परिवहन जहाज को नष्ट कर दिया, जबकि कराची के तेल भंडारण केंद्र को भारी नुकसान पहुँचाया। सुबह होने पर ही पाकिस्तानी कमान को एहसास हुआ कि उस रात भारतीय नौसेना की प्राथमिक हमलावर शक्ति पी-15 मिसाइलों से लैस अत्याधुनिक प्रोजेक्ट 205 मिसाइल नावें (बोट्स) थीं।

इस लेख में, हम भारत और सोवियत संघ के बीच नौसेना सहयोग को प्रेरित करने वाले उद्देश्यों की संक्षेप में जांच करेंगे, इसकी उत्पत्ति का पता लगाएंगे, और यह निर्धारित करने का प्रयास करेंगे कि इस क्षेत्र में रूसी-भारतीय सहयोग का आधुनिक ढांचा आज भी प्रासंगिक है या नहीं।

साल 1960 के आस-पास दुनिया की राजनीति बहुत तेजी से बदल रही थी। बड़े और शक्तिशाली देशों की आपसी दुश्मनी के कारण कई जगह युद्ध हो रहे थे। भारत भी कई

लड़ाइयों में फंस गया था। भारत ने 1961 में गोवा को आजाद कराया। इसके बाद 1962 में चीन के साथ और 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध हुआ। इसी समय, सोवियत संघ के रिश्ते भी चीन और पश्चिमी देशों के साथ खराब हो रहे थे। भारत और सोवियत संघ, दोनों के दुश्मन एक ही थे। इसलिए दोनों देशों ने धीरे-धीरे हाथ मिला लिया और सेना के स्तर पर एक-दूसरे की मदद करने लगे।

साल 1965 में पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध ने भारतीय नौसेना की तीन बड़ी कमियों को सामने ला दिया। पहली कमी यह थी कि भारत के पास बहुत पुराने समुद्री जहाज थे। ये जहाज दूसरे विश्व युद्ध के समय के थे। दूसरी कमी यह थी कि ये सारे जहाज ब्रिटेन के बने हुए थे। ब्रिटेन ने भारत को नए जहाज और युद्ध का सामान देने से मना कर दिया था। तीसरी और सबसे बड़ी कमी यह थी कि भारतीय नौसेना के पास एक भी पनडुब्बी (सबमरीन) नहीं थी। ब्रिटेन भारत को पनडुब्बी बेचना बहुत खतरनाक मानता था और उसने भारत को यह देने से मना कर दिया था।

भारतीय नौसेना के पास पनडुब्बी (सबमरीन) न होने से एक बड़ी कमजोरी थी। वो पानी के नीचे से दुश्मन पर हमला नहीं कर सकते थे। अगर भारत के पास कुछ पनडुब्बियां होतीं, तो वो पाकिस्तान के दो सबसे बड़े बंदरगाहों—कराची और चटगांव का रास्ता रोक सकती थीं। इस कमजोरी को दूर करने के लिए, भारत ने साल 1965 में सोवियत संघ से चार आधुनिक पनडुब्बियां खरीदने का फैसला किया। अगले युद्ध से पहले ये चारों पनडुब्बियां भारतीय सेना में शामिल हो गईं। भारतीय नौसेना के लिए यह एक बहुत बड़ी कामयाबी थी। सोवियत संघ के नाविकों ने भारतीय जवानों को इन्हें चलाना सिखाया। साथ ही, रूस के इंजीनियरों ने विशाखापत्तनम में इन पनडुब्बियों की मरम्मत और देखरेख का इंतजाम भी किया।

हालांकि, भारतीय नौसेना ने इन पनडुब्बियों को चलाना तो सीख लिया था, लेकिन साल 1971 के युद्ध के दौरान एक नया डर था। नौसेना के मुख्यालय और पनडुब्बियों के बीच बातचीत का तालमेल अभी उतना मजबूत नहीं था। भारत को डर था कि गलती से किसी तीसरे देश का जहाज न डूब जाए। दुनिया के देश भारत पर नजर रखे हुए थे और कोई भी छोटी सी गलती भारत को भारी पड़ सकती थी। इसलिए, सरकार ने पनडुब्बियों के लिए बहुत सख्त नियम बना दिए। युद्ध में इनका इस्तेमाल हमला करने के बजाय सिर्फ दुश्मन पर नजर रखने (जासूसी करने) के लिए किया गया। इस वजह से पनडुब्बियां अपनी पूरी ताकत से नहीं लड़ पाईं। युद्ध के बाद इन पनडुब्बियों ने कोई बड़ी लड़ाई तो नहीं लड़ी, लेकिन इन्होंने भारतीय नौसेना के इतिहास में एक नया रास्ता खोल दिया। वो भारत की पहली पनडुब्बियां थीं। इसलिए, 1971 की जंग का असली और बड़ा काम पानी के ऊपर तैरने वाले जहाजों ने ही संभाला।

पानी के ऊपर तैरने वाले जहाजों के मामले में भारत और सोवियत संघ का सहयोग पहले ही शुरू हो चुका था। 9 अगस्त 1971 दोनों देशों की दोस्ती के लिए एक बहुत बड़ा दिन था। इसी दिन भारत और सोवियत संघ के बीच शांति और दोस्ती

का एक बड़ा समझौता हुआ था। इस समझौते के बाद दोनों देशों की नौसेनाओं ने मिलकर काम करना शुरू किया। भारत ने सोवियत संघ से पहरा देने वाले जहाज और प्रोजेक्ट 205 नाम की आधुनिक मिसाइल नावें (बोट्स) खरीदीं। इन नावों पर 'पी-15 टर्मिट' मिसाइलें लगी थीं। ये मिसाइलें बहुत दूर तक मार कर सकती थीं और बहुत भरोसेमंद थीं। ये नावें बिल्कुल सही समय पर भारत आईं। इनसे भारतीय नौसेना को एक ऐसा ताकतवर हथियार मिला जो समुद्र की लड़ाई का पूरा रुख बदल सकता था। इन मिसाइल नावों ने भारतीय नौसेना की ताकत को बहुत बढ़ा दिया। इन्होंने पाकिस्तान के कराची बंदरगाह पर दो बड़े हमले किए। पहला हमला 4 और 5 दिसंबर की रात को हुआ, जिसे 'ऑपरेशन ट्राइडेंट' नाम दिया गया।

इस हमले ने पाकिस्तानी नौसेना को पूरी तरह बर्बाद कर दिया। सबसे अच्छी बात यह थी कि इसमें भारत का एक भी सैनिक शहीद नहीं हुआ। दूसरा हमला 8 और 9 दिसंबर की रात को हुआ, जिसे 'ऑपरेशन पायथन' नाम दिया गया। इस हमले में पाकिस्तान के कई जहाज डूब गए। सबसे बड़ा नुकसान कराची बंदरगाह को हुआ। वहां रखा आधे से ज्यादा तेल और गोला-बारूद जलकर राख हो गया। इससे पाकिस्तान को अरबों डॉलर का नुकसान हुआ। इन दोनों हमलों की कामयाबी से भारत को युद्ध जीतने में बहुत मदद मिली। इसी जीत की याद में हर साल 4 दिसंबर को 'भारतीय नौसेना दिवस' (नेवी डे) मनाया जाता है।

भारतीय नौसेना की इस बड़ी जीत से पाकिस्तान का दोस्त अमेरिका बहुत घबरा गया। भारत पर दबाव बनाने के लिए अमेरिका ने अपने लड़ाकू जहाजों का एक बड़ा बेड़ा (टास्क फोर्स 74) हिंद महासागर में भेज दिया। लेकिन अमेरिका के इस कदम को देखकर सोवियत संघ की नौसेना भी तुरंत आगे आ गई। दोनों बड़ी ताकतों के बीच युद्ध न छिड़ जाए, इसलिए अंत में दोनों देशों ने इस लड़ाई से दूरी बना ली और सीधे तौर पर बीच में नहीं आए।

युद्ध खत्म होने के बाद भारत और सोवियत संघ के रिश्ते और भी मजबूत हो गए। सोवियत संघ के हथियार सस्ते थे और वे लड़ाई में अपनी ताकत साबित कर चुके थे। दोनों देशों की गहरी दोस्ती की वजह से भारत ने रूस से बहुत सारे नए हथियार खरीदे। भारत ने अपने बेड़े में कई तरह के नए जहाज शामिल किए। इनमें मिसाइल नावें, पहरा देने वाले जहाज, पनडुब्बी से लड़ने वाले जहाज और आधुनिक किलो-क्लास पनडुब्बियां शामिल थीं। इस तरह भारत ने सोवियत संघ से 20 से ज्यादा जहाज हासिल किए। इनमें से ज्यादातर जहाजों को भारत के ही कारखानों (शिपयार्डों) में जोड़कर तैयार किया गया था।

इसके बाद दोनों देशों ने परमाणु पनडुब्बी (न्यूक्लियर सबमरीन) बनाने पर काम शुरू किया। साल 1981 में सोवियत संघ के अधिकारियों ने भारत का दौरा किया। उन्होंने भारत को परमाणु पनडुब्बी डिजाइन करने और उसकी तकनीक बनाने में मदद की पेशकश की। भारतीय सैनिकों को इसे चलाने की ट्रेनिंग देने के लिए सोवियत संघ ने अपनी एक परमाणु पनडुब्बी (K-43) भारत को लीज पर देने का फैसला किया।

भारतीय जवानों की यह ट्रेनिंग छह साल तक चली और 1987 में पूरी हुई। व्लादिवोस्तोक शहर में इस जहाज की पूरी मरम्मत की गई। इसी बीच दुनिया की राजनीति बदल गई। अमेरिका और सोवियत संघ के रिश्ते सुधरने लगे थे। अमेरिका ने सोवियत संघ पर दबाव डाला कि वह भारत को यह पनडुब्बी न दे। लेकिन

सोवियत संघ ने अमेरिका की बात नहीं मानी। उसने साल 1988 की शुरुआत में यह परमाणु पनडुब्बी भारत को सौंप दी।कुछ समय बाद यह मजबूत दोस्ती थोड़ी कमजोर पड़ने लगी।

सोवियत संघ के टूटने के बाद रूस के पास नए जहाज बनाने के लिए पैसों की कमी हो गई। जहाज बनाने वाली कई फैक्ट्रियां अब अलग हुए नए देशों के पास चली गई थीं। भारत भी रूस की खराब आर्थिक हालत को देखकर उससे नए जहाज खरीदने में सावधानी बरत रहा था। इसके बाद दोनों देशों का यह काम साल 2000 के बाद ही दोबारा शुरू हो सका। इस दोस्ती को दोबारा जिंदा करने के लिए भारत ने रूस से आईएनएस विक्रमादित्य नाम का एक बड़ा विमानवाहक पोत (लड़ाकू जहाजों को ले जाने वाला जहाज) खरीदा और उसे आधुनिक बनाने का ऑर्डर दिया।

भारत सरकार ने अपने नए विमानवाहक पोत के लिए तीन जहाजों को चुना। इनमें फ्रांस का क्लेमेंशू, अमेरिका का किटी हॉक और रूस का एडमिरल गोर्शकोव शामिल थे। फ्रांस और अमेरिका के जहाज तुरंत मिलने के लिए तैयार थे। वो आम जहाजों की तरह थे और उनमें ज्यादा बदलाव करने की जरूरत नहीं थी। इसके उलट, रूस का जहाज एक खास तरह का लड़ाकू जहाज था। उसे पूरी तरह बदलने और मरम्मत करने की बड़ी जरूरत थी। फिर भी, भारत ने रूस के जहाज को ही चुना। पश्चिमी देशों के जहाज कई सालों तक काम करने की वजह से बुरी तरह घिस चुके थे।

दूसरी तरफ, रूस का जहाज बहुत कम चला था और 1992 से ही गोदी में खड़ा था। इसके बाद 9 मार्च 2004 को रूस का यह जहाज आधिकारिक रूप से भारत को मिल गया। रूस के सेवेमाश कारखाने (शिपयार्ड) में इसे नया और आधुनिक बनाने का काम शुरू हुआ। इस जहाज को दोबारा तैयार करने में आठ साल का लंबा समय लगा। आखिरकार, यह जहाज रूस के सबसे बड़े विमानवाहक पोत (एडमिरल कुज़नेत्सोव) जैसा ताकतवर बनकर तैयार हुआ। हालांकि, इस नए जहाज से रूस की मिसाइलें हटा दी गईं। इसकी जगह इस पर भारत में बने कई नए सिस्टम और आधुनिक उपकरण लगाए गए।

नए विक्रमादित्य का एयर विंग मिग-29के लड़ाकू विमानों, और K-28 तथा K-31 हेलीकॉप्टरों से बना था। 16 नवंबर 2013 को, जहाज पर भारतीय नौसेना का झंडा फहराया गया, जिसने इस नए हार्डवेयर में महारत हासिल करने के लिए भारतीय चालक दल के प्रयासों की शुरुआत को चिह्नित किया।

विमानवाहक पोत की बातचीत के समानांतर, ब्रह्मोस बहुउद्देशीय क्रूज मिसाइल के संयुक्त विकास पर काम चल रहा था। 1998 के समझौते और बड़े पैमाने पर उत्पादन की शुरुआत के बीच केवल छह साल बीते, जो अब अनुमानित 80 से 100 मिसाइल प्रति वर्ष की दर से चल रहा है।

सोवियत संघ के टूटने के बाद रूस के पास नए जहाज बनाने के लिए पैसों की कमी हो गई। जहाज बनाने वाली कई फैक्ट्रियां अब अलग हुए नए देशों के पास चली गई थीं। भारत भी रूस की खराब आर्थिक हालत को देखकर उससे नए जहाज खरीदने में सावधानी बरत रहा था।

रूसी पी-800 ओनिक्स एंटी-शिप मिसाइल का एक संस्करण, ब्रह्मोस भारतीय नौसेना में अपनी श्रेणी का प्राथमिक हथियार बन गया है। सतह, पनडुब्बी, वायु और भूमि संस्करण मानकीकृत हैं। यह बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं (इकोनॉमीज ऑफ स्केल), साझा लॉजिस्टिक्स और एक एकल परिचालन प्रणाली के माध्यम से मिसाइल की कीमत को कम करता है। ब्रह्मोस एयरोस्पेस संयुक्त उद्यम अपनी रेंज का विस्तार करके और अपनी मार्गदर्शन प्रणालियों में सुधार करके मिसाइल को अपग्रेड करना जारी रखे हुए है। वर्तमान में, वियतनाम, इंडोनेशिया और मलेशिया के साथ निर्यात वार्ता चल रही है।

साल 1990 के दशक में हथियारों को लेकर जो मंदी और संकट था, वह अब पूरी तरह खत्म हो चुका है। लेकिन आज दोनों देशों की यह साझेदारी पहले से बहुत अलग दिखती है। पहले सोवियत संघ भारत को सीधे बड़ी मात्रा में हथियार बेचता था। लेकिन आज दोनों देश मिलकर पैसा लगाते हैं, तकनीक बांटते हैं और एक-दूसरे के अनुभव से सीखते हैं। यह अब एक सच्ची और बराबर की साझेदारी है।भारत के कारखाने अब खुद कई तरह के हथियार बना रहे हैं।

हथियारों का ज्यादातर उत्पादन अब भारत के भीतर ही हो रहा है। यह बदलाव भारत सरकार की 'आत्मनिर्भर भारत' नीति को मजबूत करता है। इसका मकसद देश को रक्षा के मामले में आत्मनिर्भर और आजाद बनाना है। इसके साथ ही, रूस भी चाहता है कि दुनिया में किसी एक देश का राज न हो। रूस की यह सोच भारत और रूस के रिश्तों को और मजबूत करती है। मिलकर काम करने से दोनों देशों की सुरक्षा और ताकत बढ़ती है।

मैक्सिम देमचेंको

एसोसिएट प्रोफेसर, पूर्वी भाषा विभाग, मॉस्को स्टेट लिंग्विस्टिक यूनिवर्सिटी (MSLU); हिंदी शिक्षक और अनुवादक

blessed.self@gmail.com

रूस में हिंदी
संभावनाएं और चुनौतियां

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

"Hindi is the soul of Indian culture."

— कमलापति त्रिपाठी, लेखक और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री (1969-1970)

आज दुनिया भर में आधा अरब से अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली हिंदी भाषा में रूसियों की रुचि का एक लंबा इतिहास रहा है। मॉस्को इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज में वर्ष 1947 में ही हिंदी पढ़ाना शुरू कर दिया गया था। आज भी छात्र इसे एमजीआईएमओ (MGIMO) यूनिवर्सिटी, रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी फॉर द ह्यूमैनिटीज (RSUH), मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज, मॉस्को स्टेट लिंग्विस्टिक यूनिवर्सिटी, सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी और कज़ान फेडरल यूनिवर्सिटी जैसे प्रमुख रूसी विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं।

स्कूली शिक्षा के स्तर पर, भारत की इस राजभाषा को सिखाने वाली सबसे प्रसिद्ध पहल ऐतिहासिक स्कूल नंबर 19 थी, जिसका नाम वी.जी. बेलिंस्की के नाम पर रखा गया था। 19वीं शताब्दी में स्थापित यह स्कूल वर्ष 1961 से बच्चों के लिए हिंदी पाठ्यक्रम संचालित कर रहा था (दुर्भाग्य से, यह कुछ वर्ष पहले बंद हो गया)। इसके अलावा, सेंट पीटर्सबर्ग में हिंदी और अंग्रेजी के उन्नत अध्ययन वाला 'स्कूल नंबर 653' आज भी संचालित

है। इसके कई स्नातक देश भर के ओरिएंटल स्टडीज संकायों में दाखिला लेकर इंडोलॉजी (भारतविद्या) में अपना करियर बनाते हैं। इसी स्कूल में हिंदी शिक्षिका यूलिया व्लादिमीरोवना बेशचुक के मार्गदर्शन में एक शास्त्रीय भारतीय कुचिपुड़ी नृत्य स्टूडियो भी चलाया जा रहा है।

हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के लिए भारत में इंटर्नशिप करने के अच्छे अवसर हैं। इसका कारण यह है कि रूस और भारत के विश्वविद्यालयों के बीच कई समझौते हुए हैं। दिल्ली का जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) और आगरा का केंद्रीय हिंदी संस्थान, रूसी विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान उन लोगों के लिए भी हिंदी के कोर्स चलाता है जो इसे सीखना चाहते हैं। अब तक अलग-अलग उम्र और काम करने वाले दर्जनों रूसी नागरिक यहाँ से हिंदी सीख चुके हैं। जो लोग सिर्फ भारतीय संस्कृति में रुचि रखते हैं या अपने भारतीय दोस्तों और व्यापारिक साथियों से उनकी भाषा में बात करना चाहते हैं, उनके लिए भी कई कोर्स उपलब्ध हैं। इसके अलावा, दिल्ली स्थित 'जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र' में भी हिंदी सिखाई जाती है।

तो, रूस में हिंदी का क्या हाल है और इसके आगे बढ़ने की कितनी संभावना है? पिछले साल 6 सितंबर को, रूस के विज्ञान और उच्च शिक्षा उप-मंत्री, कोंस्टांटिन मोगिलेव्स्की ने बताया था कि रूसी छात्र अब हिंदी में ज्यादा रुचि ले रहे हैं। उन्होंने कहा, "सिर्फ मॉस्को में ही MGIMO, RSUH, मॉस्को स्टेट यूनिवर्सिटी और मॉस्को स्टेट लिंग्विस्टिक यूनिवर्सिटी जैसे कई बड़े संस्थान हैं। यहाँ हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़ रही है और पहले के मुकाबले अब दो-तीन गुना ज्यादा छात्र एक क्लास में आ रहे हैं।"

हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के लिए भारत में इंटर्नशिप करने के अच्छे अवसर हैं। इसका कारण यह है कि रूस और भारत के विश्वविद्यालयों के बीच कई समझौते हुए हैं। दिल्ली का जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) और आगरा का केंद्रीय हिंदी संस्थान, रूसी विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

(https://tass.ru/obschestvo/24981717)

हालांकि, हिंदी जानने वाले या सीखने के इच्छुक कुल कितने रूसी हैं, इसके कोई पक्के आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। हिंदी जानने वाले विशेषज्ञों की बाज़ार में कितनी मांग है, इस पर भी कोई सर्वे नहीं हुआ है। फिलहाल, हम केवल लोगों के अनुभव और काम करने वाले विशेषज्ञों की राय पर ही भरोसा कर सकते हैं। यह सच है कि विश्वविद्यालयों में हिंदी सीखने की मांग है, चाहे वो इसे मुख्य विषय के रूप में पढ़ें या किसी अन्य विषय (जैसे पत्रकारिता या अंतरराष्ट्रीय अध्ययन) के साथ।

फिर भी, अगर हम इसकी तुलना अंग्रेजी, फ्रेंच या स्पैनिश जैसी भाषाओं से करें, तो हिंदी सीखने वालों की संख्या अभी काफी कम है। चीनी और अरबी के मुकाबले भी इसमें रुचि कम है।

कॉलेज के 'ओपन-हाउस' प्रोग्राम्स में आमतौर पर 10% से भी कम छात्र हिंदी लेने की बात करते हैं, क्योंकि उनके पास चुनने के लिए 10 या उससे भी ज्यादा दूसरी भाषाएँ होती हैं। साथ ही, विश्वविद्यालयों में सीटें भी बहुत कम हैं। कई जगह तो हर साल सिर्फ 10 छात्रों का एक छोटा सा समूह ही हिंदी पढ़ पाता है। कुछ विश्वविद्यालयों में तो बैच खत्म होने के बाद ही अगला बैच शुरू होता है। हमारे विचार में, इसके पीछे कई कारण हैं।

पहला, जबकि यह सूत्र सच है कि "मांग आपूर्ति पैदा करती है," शिक्षा में इसका उल्टा भी उतना ही मान्य है: "आपूर्ति मांग को प्रेरित करती है।" औसत उपभोक्ता पेशकशों के एक निश्चित सेट का आदी हो जाता है और विशेष रूप से उन्हीं की खोज करता है, विकल्पों पर बहुत कम ध्यान देता है। इस मानसिकता को बदलने के लिए, केवल शेल्फ पर एक नया उत्पाद रख देना ही काफी नहीं है; अभियानों और प्रचार के माध्यम से सक्रिय रूप से इस ओर ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। यदि किसी परिवार में पीढ़ियों से अंग्रेजी या फ्रेंच का अध्ययन किया गया है, तो माता-पिता स्वयं आवेदकों को उन भाषाओं में से किसी एक को चुनने के लिए प्रोत्साहित करेंगे, और उनका ध्यान कभी भी हिंदी की ओर नहीं जाएगा, जिसे गलती से एक विदेशी शौक के रूप में देखा जाता है। शैक्षणिक क्षेत्र में हिंदी सीखने वालों की संख्या और उनकी दृश्यता को बढ़ाना ही भविष्य के आवेदकों के बीच व्यापक रुचि को वास्तव में प्रोत्साहित कर सकता है।

दूसरा, श्रम बाजार में हिंदी की मांग की संभावनाएं अस्पष्ट बनी हुई हैं। सोवियत युग के दौरान, हिंदी भाषी विशेषज्ञों को मोटे तौर पर चार (अक्सर एक-दूसरे से जुड़े) समूहों में विभाजित किया जा सकता था:

(1) शास्त्रीय भाषाविद् और अन्य विषयों के इंडोलॉजिस्ट

जिनके लिए भारतीय भाषाओं का अध्ययन अनुसंधान करने और शास्त्रीय एवं आधुनिक साहित्य का अनुवाद करने के लिए आवश्यक था

(2) राजनयिक

विशेषज्ञों का एक अपेक्षाकृत छोटा समूह जिनके लिए एक देश से दूसरे देश में निरंतर स्थानांतरण और पुनर्वास के कारण हिंदी प्राथमिकता नहीं थी

(3) पत्रकार

(4) विभिन्न क्षेत्रों में, विशेष रूप से सैन्य-तकनीकी क्षेत्र में स्वयं अनुवादक

उनमें से अधिकांश राज्य-प्रायोजित प्रणाली के तहत शिक्षित थे और स्नातक होने के बाद उन्हें तुरंत उनके प्रासंगिक विशेषज्ञता वाले कार्य में नियुक्त कर दिया जाता था। 1990 के दशक में, हिंदी भाषी विशेषज्ञों की मांग में गिरावट आई, जिसका आंशिक कारण यह था कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर काम करने वाले भारतीय व्यवसाय संचार की भाषा के रूप में मुख्य रूप से अंग्रेजी का उपयोग करते थे। मोटे तौर पर कहें तो यह स्थिति आज भी बनी हुई है, हालांकि हाल के वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने भारत के राजनीतिक और आर्थिक जीवन में हिंदी

को उसके सही स्थान पर बहाल करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। हिंदी का उपयोग तेजी से प्रतिष्ठा और भारतीय सभ्यता के आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक बनता जा रहा है।

वर्ष 2014 से सरकारी स्तर पर हिंदी का महत्व बढ़ा है। राष्ट्रीय हिंदी दिवस (14 सितंबर) और विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) को अब सरकारी तौर पर बढ़ावा दिया जाता है। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से वैश्विक मंच पर हिंदी काफी लोकप्रिय हुई है। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय व्यापार जगत अभी भी मुख्य रूप से अंग्रेजी में ही काम करता है, इसलिए वहां हिंदी को पूरी तरह अपनाने के लिए अभी काफी प्रयास करने की जरूरत है।

एक सकारात्मक बदलाव यह है कि छोटे और मध्यम स्तर के रूसी-भारतीय व्यापारिक संबंध बढ़ रहे हैं। सरकारी अधिकारियों या बड़ी कंपनियों के कर्मचारियों के विपरीत, छोटे स्तर के व्यापारी अक्सर अंग्रेजी के बजाय अपनी मातृभाषा में बात करना पसंद करते हैं। ऐसे में, हिंदी का ज्ञान न केवल अनुवादकों के लिए, बल्कि खुद रूसी व्यापारियों के लिए भी फायदेमंद है, ताकि वे भारतीय भागीदारों के साथ बेहतर जुड़ाव बना सकें। इसके अलावा, पिछले दो सालों में रूस में भारतीय श्रमिकों की संख्या भी बढ़ी है, जो उद्योगों, खेती और सेवा क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। इससे हिंदी अनुवादकों और शिक्षकों के साथ-साथ, रूस में भारतीय प्रवासियों को रूसी भाषा सिखाने वाले शिक्षकों के लिए भी नए मौके पैदा हुए हैं। हमारा मानना है कि जो संस्थान हिंदी के कोर्स चला रहे हैं, उन्हें छात्रों को यह साफ तौर पर समझाना चाहिए कि दोनों देशों के बीच सहयोग की वास्तविक स्थिति क्या है। इससे छात्र बेहतर समझ के साथ हिंदी को अपना करियर बना पाएंगे।

तीसरी बात यह है कि अक्सर शुरुआत में छात्र यह गलतफहमी पाल लेते हैं कि हिंदी पढ़ना बहुत आसान है। लेकिन जब वे जटिल व्याकरण या भाषा के कठिन पहलुओं से टकराते हैं, तो वे निराश होकर छोड़ देते हैं। छात्रों को पहले दिन से ही पता होना चाहिए कि यह सफर कैसा है।

हिंदी में महारत हासिल करना आसान नहीं है, इसके लिए कड़ी मेहनत और सही प्रेरणा की जरूरत होती है। हिंदी की ध्वनियाँ (जो रूसी या अंग्रेजी से काफी अलग और विस्तृत हैं), देवनागरी लिपि का लेखन, अक्षरों का जुड़ाव (संयुक्ताक्षर) और वाक्य बनाने का अनोखा तरीका—ये सब शुरू में कठिन लग सकते हैं। साथ ही, हिंदी में शब्दों का भंडार बहुत विशाल है। उदाहरण के लिए, "प्यार" शब्द के लिए ही हिंदी में कई शब्द हैं—जैसे प्रेम, मोहब्बत,

एक सकारात्मक बदलाव यह है कि छोटे और मध्यम स्तर के रूसी-भारतीय व्यापारिक संबंध बढ़ रहे हैं। सरकारी अधिकारियों या बड़ी कंपनियों के कर्मचारियों के विपरीत, छोटे स्तर के व्यापारी अक्सर अंग्रेजी के बजाय अपनी मातृभाषा में बात करना पसंद करते हैं। ऐसे में, हिंदी का ज्ञान न केवल अनुवादकों के लिए, बल्कि खुद रूसी व्यापारियों के लिए भी फायदेमंद है, ताकि वे भारतीय भागीदारों के साथ बेहतर जुड़ाव बना सकें।

स्नेह, इश्क आदि। इसलिए, यदि कोई छात्र हिंदी सीखना चाहता है, तो उसे निरंतर अभ्यास और इस भाषा के प्रति सच्चे लगाव की आवश्यकता है।

तीसरी बात यह है कि अक्सर छात्र यह सोचकर हिंदी पढ़ना शुरू करते हैं कि यह बहुत आसान भाषा है। लेकिन जैसे ही वे व्याकरण के कठिन नियमों या बोलचाल की जटिलताओं में फंसते हैं, वे निराश हो जाते हैं। इसलिए, नए छात्रों को शुरुआत में ही यह साफ़-साफ़ बता देना चाहिए कि हिंदी सीखना एक बड़ी चुनौती है और इसके लिए बहुत मेहनत और पक्के इरादे की जरूरत होती है।

हिंदी की आवाज़ें (ध्वनियाँ) रूसी या अंग्रेजी से काफी अलग और ज्यादा हैं। साथ ही, देवनागरी लिपि के अक्षर, मात्राएँ

तीसरी बात यह है कि अक्सर छात्र यह सोचकर हिंदी पढ़ना शुरू करते हैं कि यह बहुत आसान भाषा है। लेकिन जैसे ही वे व्याकरण के कठिन नियमों या बोलचाल की जटिलताओं में फंसते हैं, वे निराश हो जाते हैं। इसलिए, नए छात्रों को शुरुआत में ही यह साफ़-साफ़ बता देना चाहिए कि हिंदी सीखना एक बड़ी चुनौती है और इसके लिए बहुत मेहनत और पक्के इरादे की जरूरत होती है।

और आधे अक्षरों (संयुक्त अक्षर) को लिखना भी शुरू में कठिन लग सकता है। इसके अलावा, हिंदी के वाक्य बनाने का तरीका और इसमें दूसरी भाषाओं (जैसे संस्कृत, अरबी, फारसी) से आए शब्दों की भरमार देखकर छात्र कभी-कभी घबरा जाते हैं। जैसे, हिंदी में 'प्यार' कहने के लिए ही हमारे पास 'प्रेम', 'मोहब्बत', 'स्नेह', 'अनुराग' और 'इश्क' जैसे ढेर सारे शब्द हैं!

अगर कोई छात्र सच में हिंदी में महारत हासिल करना चाहता है, तो उसे ये तीन काम करने होंगे: कभी हार न मानना, धीरे-धीरे आगे बढ़ना और बिना एक भी दिन छोड़े रोज़ाना अभ्यास करना। बिना भाषा के प्रति सच्चे लगाव के, इस सफर को पूरा करना मुश्किल है। छात्रों को पहले दिन से ही इसका एहसास होना चाहिए ताकि वे अपनी मंजिल तक पहुँच सकें।

यह गौर करने वाली बात है कि मॉस्को स्थित भारतीय दूतावास और 'जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र' (JNCC) रूस में हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए बहुत काम कर रहे हैं। जेएनसीसी हर साल 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस' पर शानदार कार्यक्रम आयोजित करता है। इसमें छात्र हिंदी प्रतियोगिताओं और क्विज़ में हिस्सा लेते हैं, हिंदी नाटक करते हैं, और साथ ही भारतीय

संगीत, नृत्य और खान-पान का लुत्फ उठाते हैं। ऐसे कार्यक्रम न सिर्फ अच्छी यादें देते हैं, बल्कि छात्रों को हिंदी सीखने के लिए और अधिक प्रेरित भी करते हैं।

भारतीय साहित्य और उसके अनुवादों को लेकर भी कई खास आयोजन होते हैं। जैसे, सितंबर 2025 में मॉस्को इंटरनेशनल बुक फेयर में भारत का अपना एक अलग 'पैवेलियन' (मंडप) था। चार दिनों तक चले इस मेले में लेखकों और अनुवादकों के साथ हुई चर्चाओं ने हजारों लोगों का ध्यान खींचा। इनमें से कई लोग ऐसे भी रहे होंगे जो अब मूल रूप में भारतीय साहित्य को पढ़ने के लिए हिंदी सीखना चाहेंगे। इसके अलावा, पिछले साल मॉस्को की लिंग्विस्टिक यूनिवर्सिटी में रामायण और महाभारत पर एक बड़ा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था, जिसमें भारत, रूस और उजबेकिस्तान के बड़े विद्वानों ने हिस्सा लिया। भारतीय साहित्य, चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, हिंदी सीखने के इच्छुक लोगों के लिए प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत है।

रूस में भारतीय प्रवासियों के संगठन भी बड़ी भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, 'हिंदुस्तानी समाज' हर साल छात्रों के लिए एक अनुवाद प्रतियोगिता आयोजित करता है, जो मशहूर अनुवादक पद्मश्री मदनलाल मधु (1925-2014) की याद में समर्पित है।

मारिया सावचेंकोव

एमजीआईएमओ (MGIMO) यूनिवर्सिटी में मास्टर की छात्रा

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन से इतर एक बैठक के दौरान व्लादिमीर पुतिन और नरेंद्र मोदी।

भारतीय ब्रिक्स (BRICS) अध्यक्षता की प्राथमिकताएँ और रूसी-भारतीय सहयोग के लिए नए क्षितिज

भारत द्वारा ब्रिक्स की कमान संभालना एक ऐसे परिवर्तनकारी क्षण का प्रतीक है जहाँ नई दिल्ली अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को 'ग्लोबल साउथ' के सामूहिक हितों के साथ जोड़कर एक वैश्विक संतुलन-निर्माता के रूप में उभर सकती है। भू-राजनीतिक घर्षण के इस दौर में, भारत का नेतृत्व न केवल आपूर्ति श्रृंखलाओं के विविधीकरण और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे तकनीकी सहयोग पर ध्यान केंद्रित करेगा, बल्कि यह ब्लॉक के भीतर एक समावेशी एजेंडा स्थापित करने की भी चुनौती लेगा जो किसी एक महाशक्ति के प्रभाव के बजाय बहुध्रुवीय व्यवस्था को प्राथमिकता दे। इस प्रकार, भारत का यह कार्यकाल अंतरराष्ट्रीय मंच पर न केवल एक प्रमुख आवाज के रूप में देश की स्थिति को सुदृढ़ करेगा, बल्कि यह एक ऐसे सेतु की भूमिका भी निभाएगा जो उग्र प्रतिद्वंद्विता और क्षेत्रीय गुटबाजी के बीच स्थिरता, विकास और साझा समृद्धि के साझा विजन को आगे ले जाने में सक्षम है।

भारत विशेष रूप से डिजिटल प्रौद्योगिकियों (Digital Technologies) के क्षेत्र में अपने 'डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर' (DPI) मॉडल को ब्रिक्स के भीतर एक साझा मानक के रूप में बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है। नई दिल्ली का मानना है कि यूपीआई (UPI) और अन्य स्वदेशी तकनीकी समाधानों को साझा करके, ब्रिक्स देश न केवल अपनी वित्तीय स्वायत्तता को मजबूत कर सकते हैं, बल्कि सीमा पार भुगतान और व्यापारिक लेनदेन की लागत को भी प्रभावी ढंग से कम कर सकते हैं। यह कदम न केवल तकनीकी आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, बल्कि विकासशील देशों के लिए एक ऐसा वैकल्पिक डिजिटल इकोसिस्टम तैयार करता है जो किसी एक देश या निजी कॉर्पोरेट एकाधिकार पर निर्भर नहीं है, जिससे ब्लॉक के भीतर आर्थिक लचीलापन और डिजिटल समावेशिता का एक नया युग शुरू हो सकता है।

इस पहल के माध्यम से, भारत न केवल अपनी तकनीकी शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है, बल्कि वह ब्रिक्स देशों के बीच एक 'तकनीकी लोकतंत्रीकरण' (Technological Democratization) की नींव भी रख रहा है। नई दिल्ली का यह प्रयास कि एआई और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का विकास केवल चंद विकसित देशों या बड़े निगमों तक सीमित न रहे, ग्लोबल साउथ के देशों के लिए एक बड़ा गेम-चेंजर साबित हो सकता है। ब्रिक्स के भीतर तकनीकी साझाकरण का एक मजबूत ढांचा स्थापित करके, भारत एक ऐसे 'डिजिटल गठबंधन' को प्रोत्साहित कर रहा है जो डेटा संप्रभुता को प्राथमिकता देता है और वैश्विक डिजिटल आपूर्ति श्रृंखलाओं में विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की निर्भरता को कम करता है। यह दृष्टिकोण न केवल तकनीकी आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, बल्कि यह एक ऐसी साझा डिजिटल अर्थव्यवस्था के निर्माण का मार्ग भी प्रशस्त करता है जहाँ नवाचार (Innovation) समावेशी हो और जिसका लाभ अंतिम छोर पर बैठे नागरिक तक समान रूप से पहुँच सके।

इस नए एजेंडे के साथ, रूस और भारत के बीच का यह रणनीतिक तालमेल ब्रिक्स के भीतर एक महत्वपूर्ण धुरी के रूप में उभरा है। रूस के लिए, भारत के साथ यह बढ़ता सहयोग केवल द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार नहीं है, बल्कि एक बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपनी 'रणनीतिक गहराई' को बनाए रखने का भी जरिया है। दोनों देशों के बीच सहयोग का दायरा अब ऊर्जा और रक्षा के पारंपरिक क्षेत्रों से निकलकर अंतरिक्ष अनुसंधान, परमाणु ऊर्जा, और आर्कटिक विकास जैसे अत्याधुनिक क्षेत्रों तक फैल गया है। इसके अतिरिक्त, ब्रिक्स के भीतर दोनों देश एक ऐसी बहुध्रुवीय व्यवस्था का समर्थन कर रहे हैं जो पश्चिमी आर्थिक प्रतिबंधों के प्रभाव को कम करने और स्थानीय मुद्राओं में व्यापार को बढ़ावा देने में सक्षम हो। यह साझा दृष्टिकोण न केवल दोनों राष्ट्रों के बीच विश्वास को और अधिक प्रगाढ़ करता है, बल्कि उन्हें एक-दूसरे की तकनीकी और संसाधन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में भी स्थापित करता है, जिससे वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए भी एक स्थिर और वैकल्पिक विकास मॉडल का रास्ता खुलता है।

आईटी क्षेत्र विशेष ध्यान देने योग्य है, क्योंकि रूसी बाजार से पश्चिमी कंपनियों के प्रस्थान के बाद पैदा हुए शून्य को भरने के लिए भारतीय आईटी कंपनियां एक स्वाभाविक विकल्प बनकर उभरी हैं। रूसी सॉफ्टवेयर डेवलपर्स और भारतीय तकनीकी विशेषज्ञता का मिलन न केवल मौजूदा तकनीकी बुनियादी ढांचे को बनाए रखने में मदद कर रहा है, बल्कि यह क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर सुरक्षा और डेटा एनालिटिक्स जैसे क्षेत्रों में संयुक्त नवाचार (Co-innovation) के नए

रूसी-भारतीय व्यापार मंच, 4-5 दिसंबर, 2025।

यह एजेंडा रूस को प्रचुर मात्रा में नए अवसर प्रदान करता है। रूसी-भारतीय संबंध वर्तमान में एक शक्तिशाली उछाल का अनुभव कर रहे हैं, जो ऊर्जा और सैन्य-तकनीकी सहयोग के पारंपरिक स्तंभों से कहीं आगे विकसित हो रहे हैं। हाल के वर्षों में, उन क्षेत्रों का दायरा जहाँ मॉस्को और नई दिल्ली साझा आधार पाते हैं, तेजी से बढ़ा है।

नई दिल्ली में रूसी-भारतीय शिक्षा शिखर सम्मेलन, अप्रैल 2024।

द्वार भी खोल रहा है। भारत की यह रणनीति कि वह रूस के साथ मिलकर 'डिजिटल संप्रभुता' पर आधारित समाधान विकसित करे, दोनों देशों के तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र को एक-दूसरे का पूरक बनाती है। इस प्रकार, ऊर्जा संबंधों की ठोस नींव पर निर्मित यह नया 'तकनीकी गठजोड़' भारत और रूस के बीच के संबंधों को एक आधुनिक, भविष्योन्मुखी और अधिक लचीला स्वरूप प्रदान कर रहा है, जो भू-राजनीतिक दबावों के बावजूद स्थिर रहने की क्षमता रखता है।

यह विकास न केवल दोनों देशों के लिए आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है, बल्कि यह एक 'तकनीकी आत्मनिर्भरता' (Technological Self-reliance) का नया मॉडल भी स्थापित कर रहा है। रूसी बाजार की जरूरतों और भारतीय तकनीकी कौशल का यह मिलन, विशेष रूप से एआई और जटिल सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में, पश्चिमी बाजारों पर निर्भरता को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत द्वारा ब्रिक्स के मंच का उपयोग करते हुए 'तकनीकी साझाकरण' का आह्वान करना इस दिशा में एक दूरदर्शी कदम है, क्योंकि यह सदस्य देशों को अपने स्वयं के डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित करने और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक इकोसिस्टम प्रदान करता है। इस प्रकार, भारत-रूस के बीच का यह बढ़ता सहयोग न केवल द्विपक्षीय संबंधों को गहरा कर रहा है, बल्कि यह ब्रिक्स के अन्य सदस्यों के लिए भी एक बेंचमार्क सेट कर रहा है कि कैसे साझा तकनीकी विजन के माध्यम से भू-राजनीतिक अस्थिरता के दौर में भी एक मजबूत और स्वायत्त डिजिटल भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

यह सांस्कृतिक और शैक्षिक जुड़ाव वास्तव में भारत-रूस संबंधों की वह 'सॉफ्ट पावर' है, जो कूटनीतिक और आर्थिक समझौतों को अधिक मानवीय और टिकाऊ बनाती है। चिकित्सा शिक्षा में सोवियत काल से चली आ रही यह विरासत न केवल हजारों भारतीय छात्रों के करियर को आकार दे रही है, बल्कि यह दोनों राष्ट्रों के बीच पीढ़ियों से एक ऐसा सेतु भी बना रही है जो आपसी विश्वास और समझ को मजबूत करता है।

जब ये छात्र अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस आते हैं, तो वे न केवल अपने साथ रूसी तकनीकी विशेषज्ञता लाते हैं, बल्कि वे दोनों संस्कृतियों के बीच 'सांस्कृतिक राजदूत' के रूप में भी कार्य करते हैं। यह व्यक्तिगत स्तर का जुड़ाव ही है जो बदलते भू-राजनीतिक परिवेश में भी इस साझेदारी को अटूट बनाए रखता है, क्योंकि यह केवल सरकारों के बीच का समझौता नहीं, बल्कि लोगों के बीच का एक साझा भविष्य है। इस प्रकार, चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में यह निरंतर सहयोग, दोनों देशों के बीच भविष्य के उन रणनीतिक उद्यमों के लिए आधार तैयार करता है, जो उच्च तकनीक, नवाचार और औद्योगिक सहकारिता की नई ऊंचाइयों को छूने की क्षमता रखते हैं।

भारत का यह व्यावहारिक और परिणाम-उन्मुख (outcome-oriented) दृष्टिकोण 2026 में ब्रिक्स की अध्यक्षता को एक नए स्तर पर ले जाएगा, जहाँ 'डिजिटल संप्रभुता' और 'तकनीकी आत्मनिर्भरता' केवल चर्चा के विषय नहीं बल्कि ठोस नीतिगत लक्ष्य होंगे। नई दिल्ली के इस मॉडल का प्रभाव ब्रिक्स के अन्य सदस्य देशों पर भी पड़ना तय है, क्योंकि वे देख रहे हैं कि कैसे भारत डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) और एआई के माध्यम से न केवल अपनी दक्षता बढ़ा रहा है, बल्कि वैश्विक निर्भरता को कम करते हुए एक समावेशी और सुरक्षित तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है। यह मॉडल सदस्य देशों को अपनी आंतरिक नीतियों में सुधार करने के लिए प्रेरित करेगा, जिससे वे भी बड़े कॉर्पोरेट या विदेशी महाशक्तियों के एकाधिकार से बाहर निकलकर, आपसी सहयोग के आधार पर अपने स्वयं के तकनीकी समाधान विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। अंततः, भारत का यह नेतृत्व एक ऐसे 'डिजिटल गठबंधन' को प्रोत्साहित करेगा जहाँ डेटा की सुरक्षा और तकनीकी संप्रभुता को साझा समृद्धि के साथ जोड़कर देखा जाएगा, जिससे ब्रिक्स एक अधिक लचीला और आत्मनिर्भर भू-राजनीतिक ब्लॉक बनकर उभरेगा।

रूस और भारत का यह रणनीतिक गठबंधन आज के अनिश्चित वैश्विक परिवेश में एक 'स्थिरता की धुरी' (Axis of Stability) के रूप में उभरा है। आपकी यह टिप्पणी बिल्कुल सटीक है कि यह साझेदारी वैचारिक बंधनों से परे है; वास्तव में, यह 'हितों के यथार्थवाद' (Realism of Interests) पर आधारित है, जहाँ दोनों देश अपनी संप्रभुता को प्राथमिकता देते हुए एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं जो किसी एक खेमे के वर्चस्व के बजाय संतुलित हो। ब्रिक्स के भीतर, मॉस्को और नई दिल्ली का यह साझा दृष्टिकोण अन्य सदस्य देशों को भी एक 'विकल्प-केंद्रित' (Alternative-centric) एजेंडे की ओर प्रोत्साहित करता है, जो पश्चिमी वित्तीय और राजनीतिक संस्थानों पर निर्भरता को कम करने में मदद करता है। लंबे समय से चले आ रहे राजनीतिक विश्वास और गहरे द्विपक्षीय संबंधों के कारण, यह साझेदारी न केवल ऊर्जा और रक्षा जैसे पारंपरिक स्तंभों पर टिकी है, बल्कि यह भविष्य की प्रौद्योगिकियों और परिवहन बुनियादी ढांचे (जैसे INSTC) में भी निरंतर विकसित हो रही है। अंततः, रूस और भारत की यह तालमेल न केवल दोनों देशों के लिए दीर्घकालिक रणनीतिक लाभ सुनिश्चित करती है, बल्कि यह ब्रिक्स को एक ऐसे मंच के रूप में मजबूत करती है जो 21वीं सदी की बहुध्रुवीय (Multipolar) वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने और उन्हें आकार देने में सक्षम है।

आगामी कार्यक्रम

तिमोफेई शिरोकोव

एमजीआईएमओ (MGIMO) के छात्र

जून और अगस्त 2026 के बीच, मॉस्को कई रोमांचक और दिलचस्प कार्यक्रमों की मेजबानी करेगा जो खेल के शौकीनों और भारत की समृद्ध और विविध संस्कृति की सराहना करने वाले लोगों, दोनों को आकर्षित करेंगे।

पार्क में योग अभियान

जून में, भारतीय सांस्कृतिक और राष्ट्रीय केंद्र 'सीता' (SITA) मॉस्को के पार्क में योग मास्टरक्लास की एक श्रृंखला आयोजित कर रहा है। इसमें शामिल होने के लिए किसी का भी स्वागत है, क्योंकि ये सत्र सभी स्तरों के लोगों के लिए खुले हैं और अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा संचालित किए जाते हैं, जो आपको मन और शरीर के बीच सद्भाव खोजने में मदद करेंगे।

आज की तेजी से बदलती दुनिया में हम अपनी आंतरिक शांति और आधार कैसे पा सकते हैं? महत्वाकांक्षा और मानसिक शांति, शहरी जीवन की हलचल और आराम, आत्म-सुधार की आवश्यकता, आधुनिक तकनीक और वर्तमान में जीने की भावना के बीच संतुलन बनाना ही रूस में होने वाले 12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का मुख्य विषय है। इसका आयोजन 21 जून को त्सारित्सिनो म्यूजियम-रिजर्व पार्क में होगा। 'ऑर्गेनिक पीपल' टीम द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में 70 से अधिक केंद्र, कलाकारों के प्रदर्शन, बच्चों और परिवारों के लिए एक्टिविटी एरिया, थीम-आधारित उत्पादों का मेला और निश्चित रूप से, भरपूर योग शामिल होगा.

इंडिया डे (भारत दिवस)

सालाना आयोजित होने वाला 'इंडिया डे' उत्सव, पारंपरिक रूप से 13 से 16 अगस्त तक ड्रीम आइलैंड पार्क में मनाया जाएगा। इसका भव्य पैमाना निश्चित रूप से हर किसी को आकर्षित करेगा। यहां बने 20 से अधिक थीम वाले क्षेत्रों में भारतीय नृत्यों, प्रसिद्ध बॉलीवुड फिल्मों की स्क्रीनिंग, योग और आयुर्वेद पर सेमिनार के साथ आगंतुकों का स्वागत किया जाएगा। ये उत्सव भारतीय व्यंजनों के अनोखे स्वादों को प्रदर्शित करेगा और रूस में ही एक असली भारतीय त्योहार का माहौल तैयार करेगा।

गणेश उत्सव

रूस में भारत की पारंपरिक संस्कृति की झलक देखना भी एक अनूठा अनुभव होगा। अगस्त के अंत में, 'सीता' सांस्कृतिक और राष्ट्रीय केंद्र ने बुद्धि और ज्ञान के देवता भगवान गणेश को समर्पित 'गणेश उत्सव' त्योहार मनाने की घोषणा की है। यह त्योहार स्थानीय लोगों और प्रवासियों के लिए भारतीय संस्कृति और परंपराओं को करीब से और गहराई से समझने का एक बेहतरीन अवसर प्रदान करता है।

डारिया कारासेवा

रूसी विदेश मंत्रालय के अंतर्गत एमजीआईएमओ (MGIMO)
यूनिवर्सिटी में मास्टर की छात्रा

स्मृति जो हमें साथ लाती है

भारत और रूस में भारतीयों के लिए क्यों मायने रखता है विजय दिवस

रूस में, 9 मई को कैलेंडर पर सिर्फ एक आम तारीख के रूप में नहीं देखा जा सकता। इस दिन पूरे देश में एक अलग ही शांती रहती है और सभी नजरें अपने इतिहास की ओर मुड़ जाती हैं. सड़कों पर हर तरफ 'सेंट जॉर्ज रिबन' दिखाई देते हैं, युद्ध स्मारकों पर ताजे फूल सज जाते हैं, और लोग अपने हाथों में युद्ध का सामना करने वाले अपने पूर्वजों की तस्वीरें लेकर निकलते हैं। रूसियों के लिए विजय दिवस या विक्ट्री डे बेहद निजी और भावुक दिन है, जो उनके पारिवारिक इतिहास और शांति के लिए चुकाई गई भारी कीमत की गहरी समझ से जुड़ा हुआ है।

रूस में रहने वाले भारतीयों के लिए भी इस खास दिन को समझना बेहद जरूरी है। रूस को करीब से महसूस करने के लिए केवल रेड स्क्वायर, मेट्रो, संग्रहालयों या विश्वविद्यालयों को देखना

ही काफी नहीं है। इसके लिए आपको यह समझना होगा कि रूसियों के लिए 9 मई सिर्फ इतिहास का एक पन्ना क्यों नहीं है। यह दिन उनके स्वाभिमान, अटूट हौसले और उस पीढ़ी को नमन करने का है जो सबसे कठिन दौर से भी जिंदा बचकर निकली। भारत खुद भी एक मुश्किल इतिहास के दर्द को अच्छी तरह जानता है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, 25 लाख से अधिक भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश भारतीय सेना में अपनी सेवाएँ दी थीं।

यह उस समय दुनिया की सबसे बड़ी स्वयंसेवी सेनाओं में से एक थी। इन भारतीय सैनिकों ने उत्तरी अफ्रीका, इटली, मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के मोर्चों पर बहादुरी से लड़ाई लड़ी। उन्होंने रेगिस्तान की तपती गर्मी, पहाड़ों के कठिन रास्तों, भीषण युद्धों और घर से दूर लंबे समय तक रहने वाले अकेलेपन का सामना किया। इस युद्ध में लाखों सैनिक शहीद हो गए और कभी अपने परिवारों के पास वापस नहीं लौट सके।

वास्तविक मानव जीवन, घर भेजे गए पत्र और उनकी वापसी का इंतजार कर रहे चिंतित परिवार हैं। युद्ध भारत के इतिहास का एक जटिल हिस्सा बना हुआ है। देश अभी स्वतंत्र नहीं हुआ था। इसके बावजूद, विश्व शांति के लिए एक बड़े खतरे को हराने में मदद करने के लिए लाखों भारतीय आगे बढ़े। यही वह जगह है जहां भारत और रूस साझा आधार पाते हैं। रूस की युद्धकालीन स्मृति एक ऐसे राष्ट्रीय बलिदान का सम्मान करने पर केंद्रित है, जिसने भारी नुकसान सहा। इसी तरह, युद्ध की भारत की स्मृति साहस, कर्तव्य और बलिदान की कहानियों को संजोकर रखती है। हालांकि ये दोनों

रूस में रहने वाले भारतीयों के लिए भी इस खास दिन को समझना बेहद जरूरी है। रूस को करीब से महसूस करने के लिए केवल रेड स्क्वायर, मेट्रो, संग्रहालयों या विश्वविद्यालयों को देखना ही काफी नहीं है। इसके लिए आपको यह समझना होगा कि रूसियों के लिए 9 मई सिर्फ इतिहास का एक पन्ना क्यों नहीं है। यह दिन उनके स्वाभिमान, अटूट हौसले और उस पीढ़ी को नमन करने का है जो सबसे कठिन दौर से भी जिंदा बचकर निकली।

इतिहास अलग-अलग अनुभवों से उपजे हैं, फिर भी वो अपनी साझा मानवीय भावना में गहराई से जुड़े हुए हैं। मित्र राष्ट्रों की जीत में भारत की भूमिका लंबे समय तक द्वितीय विश्व युद्ध की यूरोपीय कहानियों के पीछे छिपी रही। लेकिन यह इतिहास अब दुनिया के सामने आने का हकदार है। इन आंकड़ों के पीछे असली इंसानी जिंदगियां, घर भेजे गए पत्र और उनका इंतजार करते चिंतित परिवार थे। उस समय भारत आजाद नहीं हुआ था, इसलिए यह इतिहास थोड़ा जटिल है। इसके बावजूद, दुनिया के बड़े खतरे को हराने के लिए लाखों भारतीय सैनिक आगे आए थे। यहीं पर भारत और रूस की भावनाएं एक जैसी हो जाती हैं। रूस अपने उन नागरिकों के बलिदान का सम्मान करता है, जिन्होंने युद्ध में भारी नुकसान सहा। ठीक इसी तरह, भारत भी अपने सैनिकों के साहस, कर्तव्य और बलिदान की कहानियों को संजोकर रखता है। भले ही दोनों देशों के अनुभव अलग रहे हों, लेकिन उनकी इंसानी भावना और दर्द एक जैसा ही है।

रूस में रहने वाले भारतीयों के लिए विजय दिवस सम्मान और पहचान का एक बहुत बड़ा क्षण होता है। भारतीय संस्कृति में परिवार, बुजुर्गों का सम्मान, पूर्वजों का आदर करना और अपने देश की रक्षा करने वालों को याद रखना बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। रूस की 9 मई की परंपरा भी ठीक इन्हीं संस्कारों (मूल्यों) से जुड़ी है। जब वहाँ के लोग सड़कों पर अपने दादा-परदादाओं की तस्वीरें लेकर निकलते हैं, तो यह दुख, कृतज्ञता और गर्व से भरा एक बेहद निजी पारिवारिक भाव बन जाता है, जिसे हर भारतीय आसानी से महसूस कर सकता है। रेड स्क्वायर पर होने वाली विजय दिवस परेड, स्मारकों पर फूल चढ़ाना, देशभक्ति के संगीत कार्यक्रम और स्कूलों-कॉलेजों के कार्यक्रम मिलकर एक बहुत ही भावुक माहौल बनाते हैं। किसी विदेशी मेहमान को ऐसा लग सकता है मानो इस दिन पूरा देश एक ही सुर में गा रहा हो। लेकिन असल में वह एक आवाज़ लाखों परिवारों के निजी इतिहास से मिलकर बनी है। हर परिवार के पास युद्ध की अपनी एक याद है: जैसे मोर्चे की लड़ाई, घरों की सुरक्षा, नाकेबंदी (ब्लॉकेड), अस्पताल, सुरक्षित ठिकानों पर जाना, अपनों की चिट्ठियों का इंतजार और आखिरकार उनका घर वापस आना।

रूस में रहने वाले भारतीय छात्रों, डॉक्टरों, व्यापारियों और नौकरीपेशा लोगों के लिए इन यादों और कार्यक्रमों का हिस्सा बनना उन्हें वहां के समाज के और करीब लाता है। विजय दिवस उन इंसानी रिश्तों और मूल्यों को सामने लाता है जो रूस के समाज को अंदर से मजबूत बनाते हैं। इस बात का एक बड़ा और गहरा मतलब भी है। भारत और रूस ने हमेशा एक-दूसरे से भरोसे और दोस्ती की भाषा में बात की है। दोनों देशों के बीच सेना, शिक्षा, विज्ञान, बिजली (ऊर्जा), इलाज और संस्कृति के क्षेत्रों में बहुत मजबूत रिश्ता है। फिर भी, दो देशों के बीच असली नजदीकी एक-दूसरे के इतिहास को समझने से ही बढ़ती है। विजय दिवस दोनों देशों के बीच समझ का ठीक वैसा ही एक मजबूत पुल बनाता है। भारत के लिए 9 मई का दिन दुनिया से फासीवाद और सैन्यवाद (युद्ध की जिद) को खत्म करने में अपनी भूमिका को याद करने का एक सही समय है। वहीं, रूस में रहने वाले भारतीय समुदाय के लिए यह दिन एक साझा वैश्विक इतिहास से जुड़ने का जरिया बनता है। यह इतिहास इसमें शामिल सभी देशों और इंसानी जिंदगियों का पूरा सम्मान करता है। आखिरकार यह जीत सबकी एक मिली-जुली कामयाबी थी, क्योंकि उस भयानक युद्ध ने दुनिया के किसी भी कोने को अछूता नहीं छोड़ा था।

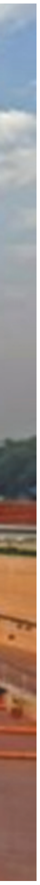

Interested in Doing Business in Russia?

We are ready to provide:
Visa & legal support
Recruitment services
Housing options
Education and medical insurance

Inquire today
info@intrud.ru

INTRUD

ИМЕЮТСЯ ПРОТИВОПОКАЗАНИЯ. ПЕРЕД ПРИМЕНЕНИЕМ НЕОБХОДИМО ПРОКОНСУЛЬТИРОВАТЬСЯ СО СПЕЦИАЛИСТОМ